वार्षिक पत्रिका

प्रज्ञा

शासकीय जे.एम.पी. महाविद्यालय, तखतपुर, जिला-बिलासपुर (छ.ग.)

www.govtjmpcollegetkp.ac.in

सत्र - 2025-26

परिचय

प्रज्ञा : महाविद्यालय की नवीनतम वार्षिक पत्रिका है, इस पत्रिका में महाविद्यालय के प्राध्यापक एवं सहायक–प्राध्यापकों के विचारों के साथ ही महाविद्यालय का इतिहास और छात्र–छात्राओं द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्राप्त उपलब्धियों को समाहित किया गया हैं। पत्रिका का उद्देश्य साहित्य विचार एवं रचनाधर्मिता को प्रोत्साहित करना है साथ ही महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं की प्रतिभाओं को खोजकर उनके विचारों को मंच प्रदान करना है।

पत्राचार

कार्यालय प्राचार्य
शास.जे.एम.पी. महाविद्यालय, तखतपुर
जिला–बिलासपुर (छ.ग.)
पिन–495330
gmail- principalgjmptakhatpur@gmail.com

उद्घोषणा

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकार के अपने है, रचना की मौलिकता से संबंधित या अन्य किसी भी विवाद के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होगा।

संपादकीय टीम

संपादक

डॉ. एस. एम. नाथ
(सहा. प्राध्यापक) अंग्रेजी विभाग

सह संपादक

डॉ. डी.पी. चंद्रवंशी
(सहा. प्राध्यापक) हिन्दी विभाग

परामर्श मंडल

डॉ. मीना शर्मा
(प्राध्यापक) राजनीति विभाग
डॉ. एस. के. पाड़े
(प्राध्यापक) गणित विभाग
डॉ. राजीव शर्मा
(सहा. प्राध्यापक) इतिहास विभाग

संपादक मंडल

डॉ. पार्वती पटेल
(सहा. प्राध्यापक) प्राणीशास्त्र विभाग
श्री अंजित सिंह नेताम
(अतिथि प्राध्यापक) हिन्दी विभाग
कु. प्राची गुप्ता
(सहा. प्राध्यापक, ज.भ.स.) कंप्यूटर विभाग
श्री हृदेश कौशिक
(सहा. प्राध्यापक, ज.भ.स.) कंप्यूटर विभाग
श्री संजय देवांगन
(सहा. प्राध्यापक, ज.भ.स.) अर्थशास्त्र विभाग

तकनीकी टीम

कु. प्राची गुप्ता
(सहा. प्राध्यापक, ज.भ.स.) कंप्यूटर विभाग
श्री हृदेश कौशिक
(सहा. प्राध्यापक, ज.भ.स.) कंप्यूटर विभाग
श्री संजय देवांगन
(सहा. प्राध्यापक, ज.भ.स.) अर्थशास्त्र विभाग
श्री श्रियम मिश्रा
(सहायक ग्रेड–2)

फोटोग्राफी संकलन

श्री अंजित सिंह नेताम
(अतिथि प्राध्यापक) हिन्दी विभाग

प्रूफ रीडिंग

डॉ. एस. एम. नाथ
(सहा. प्राध्यापक) अंग्रेजी विभाग
डॉ. डी.पी. चंद्रवंशी
(सहा. प्राध्यापक) हिन्दी विभाग
श्री अंजित सिंह नेताम
(अतिथि प्राध्यापक) हिन्दी विभाग

सदस्य

श्रीमती इंदु कौशल
(सहा. प्राध्यापक) वनस्पतिशास्त्र विभाग
डॉ. राकेश कुमार कुर्रे
(सहा. प्राध्यापक) भौतिकशास्त्र विभाग
डॉ. मीरा गुप्ता
(सहा. प्राध्यापक) अर्थशास्त्र विभाग
डॉ. विपिन चंद्र अग्रहरि
(सहा. प्राध्यापक) वाणिज्य विभाग
डॉ. सस्मिता बरगाह
(सहा. प्राध्यापक) राजनीति विभाग
श्रीमती सिमरन टेकचंदानी
(सहा. प्राध्यापक) वाणिज्य विभाग
श्रीमती प्रियाशंकर जायसवाल
(ग्रंथपाल)
श्री अंकुर शुक्ला
(अतिथि प्राध्यापक) समाजशास्त्र विभाग
श्री शिव प्रसाद साहू
(अतिथि प्राध्यापक) रसायनशास्त्र विभाग

कला संपादक

श्री अंजित सिंह नेताम
(अतिथि प्राध्यापक) हिन्दी विभाग
कु. प्राची गुप्ता
(सहा. प्राध्यापक, ज.भ.स.) कंप्यूटर विभाग

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	रचनाकार /लेखक	पृ.क्र.
	सम्पादकीय	डॉ. एस. एम. नाथ	5
	प्राचार्य की कलम से	डॉ. विनोद कुमार दुबे	6
	शुभकामनाएँ		7–9
	इतिहास	डॉ. राजीव शर्मा	10–15
	धरोहर		
	छत्तीसगढ़ के गौरवशाली अतीत का झलक–मल्हार	डॉ. अनिता बरगाह	16–17
	आलेख		
	Teaching English as a Second Language in Rural Areas	डॉ. एस. एम. नाथ	18–20
	Vermicompost: Best Substitute of Chemical Fertilizer	डॉ. पार्वती पटेल	21–22
	अर्थशास्त्र–जीवन के हर क्षेत्र का आधार	श्री संजय देवांगन	23
	आजकल Fintek और AI कॉमर्स करियर को कैसे बदल रहे हैं	डॉ. स्वाती पाण्डेय	24
	युवाओं के सपनों का बाजार : Share Market	ओमप्रकाश	25–26
	रासायनिक जादू	डॉ. ज्योति गोस्वामी	27–30
	रसायनशास्त्र के भारतीय वैज्ञानिक	डॉ. नावेद सिद्दीकी	31–33
	संकलन		
	जनऊला/हाना	डॉ. सस्मिता बरगाह	34–35
	कविता		
	समय के आँगन में उड़ती तितली सी लड़की	श्रीमती इंदु कौशल	36
	A.I. v/s Human	कु. प्राची गुप्ता	37

	हौसला	कु. प्राची गुप्ता	37
	अधूरे सपने	श्री हृदेश कौशिक	38
	छात्र जीवन की शायरी	श्री अंकुर शुक्ला	39
	नई किताब की दुनिया	भारती विश्वकर्मा	40
	Life	श्रेया पांडेय	41
	मैं	रामानंद यादव	42
	प्रकृति	शत्रुहन यादव	43
	My inner self	मीनाक्षी साहू	44–45
	My inner voice	मीनाक्षी साहू	46
	दर्द का सावन	मीनाक्षी साहू	47
	अंधेरे का उपहार	कल्याणी यादव	48
	नारी सशक्तिकरण	श्रेया पांडेय	49
	खोया बचपन	मीनाक्षी साहू	50–51
	कहानी		
	सजगता	रानू अग्रवाल	52–53
	बोलती हुई किताब	भारती विश्वकर्मा	54–55
	चिट्ठी		
	शिक्षक के माध्यम से अपने बातों को प्रगट करना	जागृती विश्वकर्मा	56
	सीख		
	संघर्ष ही जिंदगी है	दिपेश कुमार	57
	यात्रा वृतांत		
	मेरी चैतुरगढ़ यात्रा	सौरभ गेंदले	58–60
	प्रतिवेदन		61–65

सम्पादकीय

अत्यंत हर्ष के साथ हम आपके समक्ष हमारे महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका "प्रज्ञा" प्रस्तुत कर रहे हैं।

यह पत्रिका हमारे कॉलेज के प्राध्यापकगण एवं प्रतिभावान छात्र–छात्राओं के विचार, सपनों और रचनात्मकता का प्रतिबिंब है। महाविद्यालय जीवन का वह पड़ाव है जहाँ हम केवल किताबी ज्ञान ही नहीं प्राप्त करते, बल्कि अपने व्यक्तित्व को भी निखारते हैं। इस पत्रिका के माध्यम से हमारे महाविद्यालय परिवार ने अपनी भावनाओं और विचारों को एक मंच दिया है।

इस पत्रिका को साकार करने में हमारे महाविद्यालय के प्राचार्य, प्राध्यापक एवं संपादकीय टीम के हर सदस्य ने मेहनत की है। विशेष रूप से हमारे अतिथि विधायक मान. धर्मजीत सिंह एवं वरिष्ठ अधिवक्ता लेखक श्री अशोक सिंह ठाकुर जी का आभार जिन्होंने पत्रिका प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित किये और उन सभी विद्यार्थियों का आभार, जिन्होंने अपने लेख भेजकर इस पत्रिका को जीवंत बनाया।

Dr. (Mrs.) Seema Manisha Nath

Asstt. Prof.

Govt. J.M.P. College

Takhatpur, Dt. Bilaspur (C.G.)

प्राचार्य की कलम से

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **'प्रज्ञा'** का नवीन अंक प्रकाशित होने जा रहा है। यह पत्रिका महाविद्यालय का दर्पण है जिसमें हमारे विद्यार्थियों की वर्ष भर की सृजनात्मक उपलब्धियों, मौलिक सोच और भावनात्मक अभिव्यक्ति का सुंदर प्रतिबिंब है।

'प्रज्ञा' का अर्थ है—बुद्धि और विवेक, शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर छिपी हुई प्रतिभा को तराशना और उसे समाज के प्रति संवेदनशील बनाना है। इस पत्रिका के माध्यम से हमारे छात्रों ने अपनी लेखनी द्वारा विभिन्न सामाजिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक विषयों पर जो विचार साझा किए हैं, वे सराहनीय हैं।

मैं उन सभी विद्यार्थियों को बधाई देता हूँ जिन्होंने इस अंक के लिए अपना योगदान दिया है। साथ ही, संपादक मंडल के प्राध्यापकगण भी प्रशंसा के पात्र हैं, जिन्होंने निरंतर प्रयास से इस पत्रिका को सुंदर स्वरूप प्रदान किया।

मेरी कामना है कि हमारे विद्यार्थी ज्ञान के प्रकाश से आलोकित होकर सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित करें और राष्ट्र निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान दें।

उज्ज्वल भविष्य के लिए अनंत शुभकामनाएँ!

प्राचार्य

डॉ. विनोद कुमार दुबे

टंक राम वर्मा
TANK RAM VERMA

मंत्री
छत्तीसगढ़ शासन
राजस्व एवं आपदा प्रबंधन,
पुनर्वास, उच्च शिक्षा विभाग
Minister of
Revenue and Disaster Management,
Rehabilitation, Higher Education Department
Govt. of Chhattisgarh

अर्द्धशास. पत्र क्रं. 276/2026

दिनांक 30/01/26

-: शुभकामना संदेश :-

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि, **शासकीय जे.एम.पी. महाविद्यालय, तखतपुर, जिला–बिलासपुर (छ.ग.)** की वार्षिक पत्रिका **"प्रज्ञा"** का प्रकाशन किया जा रहा है। निरन्तर पत्रिकाओं का प्रकाशन विद्यार्थियों में लेखन एवं पठन–पाठन के प्रति रूचि को बढ़ाता है।

यह पत्रिका छात्र/छात्राओं की सांस्कृतिक, साहित्य रूचियों की अभिव्यक्ति के लिए एक सशक्त माध्यम के रूप में विकसित होगा। महाविद्यालय में पत्रिका का प्रकाशन स्वागत योग्य कदम है।

"प्रज्ञा" के प्रकाशन से महाविद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता में वृद्धि होगी एवं इसके माध्यम से ज्ञान–अर्जन, साहित्य रूचि एवं सकारात्मक विचारों से छात्र/छात्राएँ लाभान्वित होंगे।

वार्षिक पत्रिका **"प्रज्ञा"** के प्रकाशन की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ।

मंगलकामनाएं ...

(टंक राम वर्मा)

प्रति,

(डॉ. विनोद कुमार दुबे)
प्राचार्य,
शासकीय जे.एम.पी. महाविद्यालय, तखतपुर
जिला–बिलासपुर (छ.ग.)

निवास- बी-5/10, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.) पिन कोड- 492001, दूरभाष- 0771-2991022
कार्यालय- कक्ष क्र. एम-1/17, मंत्रालय, महानदी भवन, नवा रायपुर, अटल नगर (छ.ग.) 492002, दूरभाष- 0771-2510527, 0771-2221221

धर्मजीत सिंह

विधायक – तखतपुर

विधानसभा क्षेत्र क्र. 28

निवास : नन्द किशोर विहार,
विकास नगर, 27 खोली,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

94255 30734

dharamjeetsingh.mla@gmail.com

पत्र क्रमांक MLA/TKP-28

दिनांक : 30/01/26

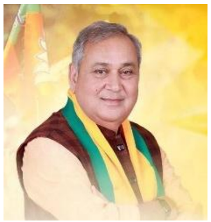

–:: शुभकामना संदेश ::–

मुझे यह जानकार अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि शासकीय जे.एम.पी. महाविद्यालय तखतपुर, जिला–बिलासपुर (छ.ग.) के द्वारा ''**प्रज्ञा**'' पत्रिका का प्रकाशन करने जा रही है। इस प्रत्रिका के द्वारा महाविद्यालय की उपलब्धियां, समन्वित–ज्ञानार्जन, विचारों की सृजनशीलता और बौद्धिक विकास का सशक्त माध्यम है। यह पत्रिका विद्यार्थियों की प्रतिभा को एक सशक्त मंच प्रदान करने के साथ–साथ उनके सर्वांगिण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी। यहां प्रस्तुत रचनाएं विद्यार्थियों की सोच, संवेदनशीलता और सामाजिक सरोकारों को अभिव्यक्त करती हैं, जो भविष्य के लिए प्रेरणाश्रोत का कार्य करेगी।

महाविद्यालय परिवार द्वारा ''**प्रज्ञा**'' पत्रिका प्रकाशन में अपना अमूल्य योगदान देने वाले महाविद्यालय के प्राचार्य, संपादक मंडल, मार्गदर्शक, प्राध्यापक एवं सभी छात्र–छात्राओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

''हार्दिक शुभकामनाओं सहित''

भवदीय

(डॉ. धर्मजीत सिंह)

जनभागीदारी समिति

शासकीय जे.एम.पी. महाविद्यालय तखतपुर, जिला–बिलासपुर (छ.ग.)

//शुभकामना संदेश//

महाविद्यालय परिवार को 'प्रज्ञा' पत्रिका के नवीन अंक के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई। मुझे आशा है कि यह महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं की साहित्यिक सृजनशीलता को नई ऊँचाई देगी। महाविद्यालय में छात्र–छात्राओं द्वारा विविध कार्यक्रम का आयोजन वर्ष भर किया जाता है पत्रिका के माध्यम से इन सभी का समग्र संग्रहण समाज के सम्मुख प्रस्तुत हो रहा है। महाविद्यालय इसी तरह उत्तरोत्तर प्रगति करता रहे। आप सभी को असीम शुभकामनाएँ।

अशोक सिंह ठाकुर

जनभागीदारी अध्यक्ष

शास.जे.एम.पी. महाविद्यालय तखतपुर

जिला–बिलासपुर (छ.ग.)

शास. जे.एम.पी. महाविद्यालय का इतिहास–स्थापना से अब तक

–डॉ. राजीव शर्मा

शास.जे.एम.पी. महाविद्यालय अपने स्थापना काल से ही ज्ञान, अनुशासन और नैतिक मूल्यों के प्रसार हेतु निरंतर प्रयासरत रहा है। सीमित संसाधनों से प्रारंभ होकर आज यह संस्था उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुकी हैं।

मध्यप्रदेश जिला गजेटियर बिलासपुर के अनुसार – "जुलाई 1965 में तखतपुर कला तथा विज्ञान महाविद्यालय समिति द्वारा इसकी स्थापना की गयी थी और यही निकाय इसके प्रबंध के लिए भी उत्तरदायी है। वर्ष 1965 – 66 में 40 छात्र (कला में 21 तथा विज्ञान में 19) थे।" इस प्रकार 15 जुलाई 1965 को 40 छात्रों के साथ यह महाविद्यालय प्रारंभ हुआ।

तत्कालिन शिक्षा प्रेमियों स्व. श्री ताहेर भाई, स्व. दुर्गा प्रसाद गुप्ता (दुर्गा साव) , स्व. ज्ञान सिंह मक्कड़, स्व. डॉ. पी. बी. लाल, स्व. मोटूमल मन्दानी, स्व केदारनाथ वाजपेयी, स्व. रामा साव, स्व. रामकिशोर महोबिया (लालाजी), स्व. दिलीप सिंह मक्कड़, स्व. बलदाऊ प्रसाद पाण्डेय, स्व. दामोदर लाल महोबिया, स्व. श्री राधिका प्रसाद जी शर्मा एवं स्व. श्री दर्शन सिंह जी आदि के सक्रिय सहयोग से इस महाविद्यालय की स्थापना हुई। उन्होंने मुक्त हस्त से आर्थिक सहयोग देकर इस संस्था की नींव डाली जो आज इस रूप में हमारे सामने है।

इस महाविद्यालय के गवर्निंग बाडी (प्रशासन समिति) के प्रथम अध्यक्ष होने का गौरव दानवीर स्व. श्री दुर्गा प्रसाद जी गुप्ता को प्राप्त हुआ था जो उस समय जे.एम.पी. उच्च माध्य. शाला समिति के भी अध्यक्ष थे। इसके पश्चात क्रमशः स्व. ताहेर भाई वनक, स्व. डॉ.सी.बी. लाल, स्व. श्री दिलबाग सिंह दर्दी, स्व. बलवन्त सिंह बग्गा, स्व. असगर भाई वनक एवं स्व. ज्ञानसिंह जी मक्कड़ अशासकीय काल में शिक्षण समिति के अध्यक्ष पद को सुशोभित किये।

शासकीयकरण के पूर्व महाविद्यालय विभिन्न समस्याओं से जूझता रहा। प्रारंभ में कक्षायें उच्चतर माध्यमिक शाला में लगती थी। अशासकीय महाविद्यालय के रूप में इसे रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर के द्वारा संबद्धता प्रदान की गयी। धरमपुरा के स्व. जनकलाल जी पांडेय एवं उनकी धर्मपत्नी स्व–श्रीमती रमाबाई पाण्डेय ने तखतपुर के शिक्षा जगत को जो अतुलनीय योगदान दिया है उसे तखतपुरवासी कभी नहीं भूला पायेगें। शास. जे. एम. पी. महाविद्यालय एवं उच्च माध्य. शाला भवन इसका ज्वलंत उदाहरण हैं। 5 दिसंबर 1956 को तखतपुर में सड़क दुर्घटना में इस क्षेत्र के दानवीर श्री जनक लाल जी पांडेय, धरमपुरा का आकस्मिक देहावसान वर्तमान हाईस्कूल के पास हो जाने से उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रमाबाई पांडेय जी द्वारा उनकी स्मृति में तखतपुर नगर में उच्चतर माध्यमिक शाला भवन व 12 एकड़ भूमि तथा महाविद्यालय भवन एवं 11.04 एकड़ भूमि प्रदान की। ट्रस्ट के सचिव स्व. श्री राधिका प्रसाद जी शर्मा के सक्रिय योगदान से महाविद्यालय भवन 1973 में पूर्ण हुआ एवं यह भवन महाविद्यालयीन संचालन समिति को प्रदान की गई तथा म. प्र. शासन द्वारा इस महाविद्यालय का नाम जनकलाल मोतीलाल पांडेय महाविद्यालय, तखतपुर, नवंबर 1973 से किया गया।

महाविद्यालय का शासकीयकरण शासकीय नीतियों एवं महाविद्यालय के प्राध्यापकों, कर्मचारियों तथा नगर के उदारमनः नागरिकों के प्रयत्न से 01/10/1982 को हुआ। महाविद्यालय के भूतल भवन का निर्माण 1974 में धरमपुरा ट्रस्ट के सचिव स्व. श्री राधिका प्रसाद शर्मा के प्रयत्नों के फलस्वरूप प्रारंभ किया गया था। शासकीयकरण के पश्चात लगभग 2 लाख खर्च कर उन्होंने अपूर्ण कार्यों को पूरा कराया, तत्पश्चात भवन का हस्तांतरण शासन को उनके द्वारा किया गया। महाविद्यालय में शासकीयकरण के पश्चात प्रशासकीय व्यवस्था के अंतर्गत कार्यकारी

प्राचार्य द्वारा कार्य संपादन किया जाता रहा किंतु नियमित प्राचार्य की नियुक्ति के पश्चात महाविद्यालय कि व्यवस्था में अपेक्षित सुधार परिलक्षित हुआ। वर्तमान में नियमित प्राचार्य के रूप में डॉ. विनोद कुमार दुबे महाविद्यालय का मार्गदर्शन कर रहे हैं। अध्यापन एवं प्रशासन के क्षेत्र में उनका संतुलित दृष्टिकोण महाविद्यालय की कार्य संस्कृति को सकारात्मक दिशा प्रदान करता है। वे शैक्षणिक गुणवता , नवाचार एवं अनुशासन को महाविद्यालय की प्राथमिकता मानते हैं। आपके कुशल मार्गदर्शन में महाविद्यालय निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहने का प्रयास कर रहा हैं। शासकीयकरण के पश्चात महाविद्यालय के प्राचार्यों की सूची इस प्रकार है —

1	श्री एस. के. सामुएल	प्रभारी प्राचार्य	01—10—80 से 30—09—83
2	श्री रवि पाण्डेय	प्राचार्य	01—10—83 से 14—07—84
3	श्री एस. के. सामुएल	प्रभारी प्राचार्य	15—07—84 से 05—11—84
4	डॉ. एन. पी. श्रीवास्तव	प्राचार्य	06—11—84 से 10—07—87
5	प्रो. आर. एल. पटेल	प्राचार्य	11—07—87 से 23—07—90
6	प्रो. व्ही. सी. श्रीवास्तव	प्रभारी प्राचार्य	24—07—90 से 22—09—91
7	प्रो. एस. एस. परिहार	प्राचार्य	23—09—91 से 30—09—03
8	डॉ. आर. पी. सहारिया	प्रभारी प्राचार्य	01—10—03 से 15—10—03
9	श्री के. एन. पाण्डेय	प्रभारी प्राचार्य	16—10—03 से 05—12—05
10	श्रीमती एस. एन. लदेर	प्रभारी प्राचार्य	06—12—05 से 09—07—06
11	डॉ. सरोज मिश्रा	प्राचार्य	10—07—06 से 02—11—07
12	डॉ. रफीक अली खान	प्रभारी प्राचार्य	03—11—07 से 21—06—09
13	डॉ. श्रीमती सपना ए. हेनरी	प्राचार्य	22—06—09 से 30—01—16
14	डॉ. श्रीमती एस. एन. लदेर	प्रभारी प्राचार्य	01—02—16 से 16—02—16
15	डॉ. आई. पी. गुप्ता	प्राचार्य	17—02—16 से 14—09—16
16	डॉ. श्रीमती एस. एन. लदेर	प्रभारी प्राचार्य	15—09—16 से 08—11—19
17	डॉ. मधुलिका लाल	प्राचार्य	09—11—19 से 31—05—24

18	डॉ. राजीव शर्मा	प्रभारी प्राचार्य	01–06–24 से 14–06–24
19	डॉ. श्रीमती एस. एन. लदेर	प्रभारी प्राचार्य	15–06–24 से 30–06–24
20	डॉ. श्रीमती सीमा नेगी	प्रभारी प्राचार्य	01–07–24 से 14–07–24
21	डॉ. श्रीमती एस. एम. नाथ	प्रभारी प्राचार्य	15–07–24 से 17–11–24
22	डॉ. विनोद कुमार दुबे	प्राचार्य	18–11–24 से वर्तमान

महाविद्यालय में वर्तमान में स्नातक स्तर पर कला , विज्ञान, वाणिज्य एवं प्रौद्योगिकी संकायों के अंतर्गत विभिन्न विषयों का अध्यापन कराया जाता है । स्नात्तकोत्तर स्तर पर 1. राजनीति शास्त्र 2.इतिहास 3.हिंदी साहित्य 4.समाजशास्त्र 5.अर्थशास्त्र 6.एम.कॉम 7.गणित एवं 8.रसायनशास्त्र विषय का अध्यापन हो रहा है। महाविद्यालय में योग्य और अनुभवी प्राध्यापक विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास के साथ–साथ उनके चरित्र निर्माण पर भी विशेष ध्यान देते हैं। महाविद्यालय में पुस्तकालय एवं वाचनालय , प्रयोगशालाएँ, खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियों की सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक हैं।

महाविद्यालय के विद्यार्थियों में शिक्षा के साथ–साथ एन.एस.एस., एन.सी.सी., रेडक्रॉस, खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यक्रमों और सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से नेतृत्व क्षमता, अनुशासन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है।

वर्तमान में महाविद्यालय के जनभागीदारी अध्यक्ष श्री अशोक सिंह ठाकुर जी हैं। महाविद्यालय में जनभागीदारी समिति के सहयोग से बाटनिकल गार्डन, वर्मी कम्पोस्ट पिट का निर्माण हुआ है। जनभागीदारी समिति के मद से प्राणीशास्त्र विषय में स्नात्तकोत्तर कक्षाएं प्रारंभ करना प्रस्तावित है। जनभागीदारी समिति द्वारा महाविद्यालय को स्नात्तकोत्तर स्तर बनाने के लिए प्रस्ताव नगर विधायक माननीय श्री धर्मजीत सिंह के माध्यम से शासन को प्रेषित किया गया है। माननीय विधायक महोदय के प्रयास से महाविद्यालय में सांस्कृतिक मंच का निर्माण किया गया है एवं महाविद्यालय खेल मैदान में मिनी स्टेडियम निर्माण हेतु 2 करोड़ की राशि स्वीकृत की गई है।

महाविद्यालय जनभागीदारी समिति के दानदाता सदस्य डॉ. महेश पांडेय जी के द्वारा स्वर्गीय जनक लाल पांडेय जी एवं उनकी धर्मपत्नी स्वर्गीय रमादेवी की स्मृति में महाविद्यालय के स्नातक और स्नात्तकोत्तर पर सर्वोच्च अंक प्राप्त छात्रों को 5000 रुपए नगद राशि के साथ प्रशस्ति पत्र प्रतिवर्ष प्रदान किया जा रहा है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु दो लाख रुपये की राशि महाविद्यालय के जनभागीदारी समिति को प्रदान की गयी है।

महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं खेल के क्षेत्रों में समय–समय पर उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त की हैं। उनके पूर्व विद्यार्थी उच्च शिक्षा, प्रशासनिक सेवाओं, शिक्षा,

व्यापार व अन्य क्षेत्रों में अपनी सेवाएं देकर समाज और राष्ट्र के विकास में योगदान दे रहे हैं। यह महाविद्यालय क्षेत्र के सामाजिक और बौद्धिक विकास में निरंतर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

शासकीय जे. एम. पी. महाविद्यालय तखतपुर केवल एक शिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कार और सामाजिक चेतना का केंद्र है। अपने गौरवशाली इतिहास, सतत विकास और शैक्षणिक प्रतिबद्धता के साथ यह महाविद्यालय भविष्य में भी क्षेत्र के विद्यार्थियों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ते हुए राष्ट्र निर्माण में योगदान देता रहेगा।

महाविद्यालय तालिका तिथि

1. 1965 – कला एवं विज्ञान महाविद्यालय तखतपुर की स्थापना हुई।
2. 1973–इस महाविद्यालय का नाम जनकलाल मोतीलाल पांडेय महाविद्यालय रखा गया।
3. 1982 – महाविद्यालय को शासन ने अधिग्रहण किया।
4. 1987 – महाविद्यालय में राजनीतिशास्त्र में स्नात्तकोत्तर कक्षाएं प्रारंभ हुआ।
5. 1998 – महाविद्यालय में जनभागीदारी समिति का गठन एवं पंजीयन हुआ।
6. 2000 – महाविद्यालय की प्रथम वार्षिक पत्रिका "प्रज्ञा" प्रकाशित।
7. 2002 – महाविद्यालय में हिंदी में स्नात्तकोत्तर कक्षायें प्रारंभ
8. 2003 – महाविद्यालय में इतिहास में स्नात्तकोत्तर कक्षायें प्रारंभ
9. 2013 – महाविद्यालय में समाजशास्त्र में स्नात्तकोत्तर कक्षायें प्रारंभ
10. 2013 – महाविद्यालय में अर्थशास्त्र में स्नात्तकोत्तर कक्षायें प्रारंभ
11. 2013 – महाविद्यालय में बी. कॉम. में स्नातक कक्षायें प्रारंभ
12. 2013 – महाविद्यालय में बी.सी.ए. की कक्षायें प्रारंभ
13. 2015 – महाविद्यालय में प्रथम नैक मूल्यांकन सम्पन्न हुआ।
14. 2021 – महाविद्यालय में पी. जी. डी. सी. ए. की कक्षायें प्रारंभ
15. 2021 – महाविद्यालय में द्वितीय नैक मूल्यांकन सम्पन्न हुआ।
16. 2022 – महाविद्यालय में गणित में स्नात्तकोत्तर कक्षायें प्रारंभ
17. 2023 – महाविद्यालय में रसायनशास्त्र में स्नात्तकोत्तर कक्षायें प्रारंभ
18. 2023 – महाविद्यालय में एम. कॉम. में कक्षायें प्रारंभ

विभागाध्यक्ष (इतिहास)
शास. जे. एम. पी. महाविद्यालय,
तखतपुर

छत्तीसगढ़ के गौरवशाली अतीत की झलक–मल्हार

शिवनाथ, अरपा, लीलागर आदि नदियों के मध्य स्थित मल्हार नगर प्राचीन समय से छ.ग. के भू–भाग का धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा है। छ.ग. के प्राचीन इतिहास के पुनर्निर्माण में ऐतिहासिक नगर मल्हार का विशेष योगदान रहा है। मल्हार का प्राचीनतम स्मारक एक गढ़ है, प्राचीन ग्रंथों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ऐसे गढ़ आज के लगभग 2500 वर्ष पूर्व में बनाये जाते थे जबकि नगर राज्य की प्रथा भारत में प्रचलित थी। अंग्रेज लेखक ग्रीन जेन्जियर ने 'प्राचीन मानव एवं स्थल' नामक ग्रंथ श्रृंखला में भारतीय का विवरण देते समय यह स्पष्ट किया है कि मौर्य काल में मिट्टी की प्राचीन गढ़ अनेक स्थानों में सुरक्षित थे, अशोक के शासनकाल में ऐसे अनेक स्थानों पर गढ़ों का निर्माण हुआ।

ईसा सन के 300 वर्ष पूर्व में प्रारंभिक शहर का मानव जीवन ऐसे सशक्त किलेबंदी में बिता जिसके चारों ओर 30 फुट ऊँचा मिट्टी का गढ़ था। मल्हार का प्राचीन गढ़ लगभग ऐसा ही है। गढ़ के भीतर बने हुए शाही महलों की सुरक्षा के लिए चारों ओर सुंदर परिखा भी खोदी गयी है, जिसमें हमेशा स्वच्छ जल भरा रहता है। मल्हार का गढ़ के बाह्य भाग के अतिरिक्त अंतिम भाग में भी सुंदर तालाब का निर्माण किया गया है। मध्यभाग में प्रमुख राजमहल था, इस गढ़ का संपूर्ण क्षेत्रफल लगभग 50–60 एकड़ तथा प्राचीन आवासीय दुर्ग का क्षेत्रफल 6.87 एकड़ है। 2.75 एकड़ भूमि पर गढ़ में प्रवेश हेतु बीच–बीच कच्चे मार्ग का निर्माण बाद में कराया गया यही प्राचीन काल में आवासीय दुर्ग कहलाते थे। संभवतः उत्तर मध्य काल में दक्षिण कोशल को दिया गया छत्तीसगढ़ नाम इन्हीं दुर्गों के समुदाय का घोतक है।

ऐतिहासिक नगरी मल्हार के प्राचीन गढ़ (किला) में 2500 साल पुरानी वस्तुएँ मिली हैं, मिट्टी की पहली परत हटाने पर कलचुरी काल के कुएँ व नालियाँ भी दिखी हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग नागपुर मंडल के टीम डॉ. एस.के. मिश्रा के निर्देशन में प्राचीन गढ़ के दक्षिण भाग की खुदाई के दौरान कीमती पत्थरों के मनके, मिट्टी के बर्तन एवं दैनिक उपयोग की वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। मल्हार में पहले और अब तक हुई खुदाई से इस बात के पुख्ता प्रमाण मिले हैं कि यह क्षेत्र मौर्य काल से लेकर कलचुरी काल तक एक उन्नत नगर के रूप में विकसित था। यह क्षेत्र ऐतिहासिक काल से लेकर कलचुरी काल तक विविध राजवंशों के अधीन था, जिसमें सात वाहन संप्रदाय, सोमवंश, पांडुवंश व कलचुरी वंश शामिल है। उत्खनन शाखा द्वारा दो वर्षों तक खुदाई की गयी जिसमें मात्र 3–4 फीट की गहराई तक उत्खनन कराया गया जिसमें तस्वीर उभरी उससे पता चलता है कि मल्हार में कलचुरियों के समय किस तरह मकान बने थे। नालियाँ, कुएँ, बर्तन, औजार आदि की झलक देखने को मिली थी।

पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक संपदा के विराट नगर मल्हार के शांतिमय शालीन संभावनामयी धरा को मेरा बार–बार प्रणाम है।

डॉ. अनिता बरगाह

अतिथि व्याख्याता इतिहास

Teaching English as a Second Language in Rural Areas

Dr. (Mrs.) Seema Manisha Nath
Asstt. Prof.
Govt. J.M.P. College
Takhatpur, Dt. Bilaspur (C.G.)

Language is a system of communication used by people living in a society. There is, therefore, a very close relationship between society and language.

The relationship may be studied in terms of regional variations. Our daily life takes us through a series of activities involving the use of language. We use several registers, styles, the spoken and written mode depending on the situation. So, language must be studied as a human phenomenon and not just as a linguistic phenomenon unrelated to life and society. This means we should go beyond the sentence and study discourses, transactions and exchanges and study the relations between language use and types of situations.

Realizing the demand and importance of English in almost all the states of India, English is taught as a compulsory language and from the very first standard even then the outcome is unsatisfactory. The learners are intelligent enough as showing good result in other subjects, but feel uncomfortable with English language. In schools belonging to rural areas English is taught as a subject and not as a language. The stress is on formation of alphabets, not on listening or speaking. The learner learns the words by cramming it. There is no creativity in their language.

Language is natural and should be learnt through various situations and experiences faced by the student. If we try to create a whole range of situations by creating them artificially in the classroom, then they will confine to classroom English only. The student cannot take it into his real-life situations because language is not methodical; it should be grown through involving them in various discourse.

Another practical problem which we face in rural areas is that the classrooms are very small in size as compared to classrooms of urban areas. The number of students is more than the pace. Each and every student needs special attention. The syllabus is such that it has to be completed within the limited time span. Students are interested in typical study. They only want to cram the answers to likely questions. Some students, especially the ones from vernacular medium schools, insist that they find guides more useful in tests and exams than the classroom instructions or studying their textbooks, while some students prefer the answers and notes dictated by teachers in their class.

Our classroom teaching only increases our students' listening ability as the maximum time is spent in teacher's lectures and students' participation is almost zero. Most of the teachers adopt translation method; students do not have the practice of speaking and reading. In rural areas we stress the students to write their answers again and again. The four main language skills are Listening, Reading, Speaking and Writing. These four skills are the foundation on which learning is built. If the base is strong then the structure will also be strong. Moreover, the method by which the course is taught also does not develop these skills in these students. The influence of mother tongue can also be seen on students in rural areas because they are not given proper pronunciation training from primary schools. The accent is on the wrong syllable of a word. For example:

School /skuːl/

Book /buːk/

Train /tːren/

Student /ˈsetuːdent/

English language is enjoyed more by the urban class students. The main factor is the socio-cultural and financial background of both sides. The performance in English of the students whose parents are employees and belong to higher middle class is better than that of the students whose parents are illiterate and belong to lower middle class. The urban students manage by parental support, coaching classes and their peer group. But the rural students are not able to cope with them and so remain backward. The parents of the urban students also guide them whenever necessary. But the parents of the rural students, being illiterate, are unable to understand and guide their children. Such children lack parental guidance and

support. Most of the parents are working in fields for their livelihood. Even the students are sent to work in the fields in between, which also affects their education.

English was actually introduced in India for the study of literature and culture. English is necessary for professional purposes like facing interviews, writing resumes, writing reports, writing letters, participation in meetings, seminars, conferences and discussions. English for communication is the mantra everywhere. But our rural students are deprived of speaking abilities because they have not been properly guided in listening skills. This may be the reason why they are not able to speak English fluently. Due to the by-heart method, the students are deprived of communicating in English easily. Such students become complexed in their life. The teacher's positive attitude and use of innovative methods of teaching can provide a reliable bridge to the process of learning English in rural areas.

Students should be guided and specially trained to concentrate not only on such areas where they can score better. For teaching basics of language to our students, the colleges in urban areas have language labs. This new way of teaching has proved very fruitful for the students. Instruction has been changed from teacher-centric to student-centric. This concept helps the student to talk freely in the class. But the negative side is that the colleges of rural areas are forbidden from language labs. Efforts should be taken to provide language labs in such colleges.

Orientation programmes should be started for teaching language to create the interest of the student. The teaching and learning process should be communicative and effective. We, as teachers, cannot confine ourselves to old translation method or textbooks. We have to be creative to save the students of ELT in rural areas. Thus English can be learnt comfortably even by the students who were born and bred up in adverse conditions.

Vermicompost: Best Substitute of Chemical Fertilizer

Dr. Parwati Patel

Assistant Professor (Zoology)

Introduction:

Vermicompost is a natural fertilizer made with the help of earthworms. It transforms organic waste such as kitchen leftovers, dry leaves, and cow dung into fertile, nutrient-rich manure. It is eco-friendly and safe compared to chemical fertilizers.

Process of Making Vermicompost:

Prepare the vermi-bed/ vermipit: A vermipit is a pit or container specially prepared for making vermicompost.

It is made in the ground or in a box using bricks, cement rings, or plastic containers. The pit is filled with layers of soil, dry leaves, cow dung, and other organic waste. Add earthworms: Introduce red wigglers (Eisenia fetida) into the bed.

Care and maintenance: Keep the bed moist, protect it from direct sunlight, and occasionally add water if needed.

Completion:

In 2–3 months, the worms convert the waste into nutrient-rich soil called vermicompost.

Importance:

Environmentally safe: Unlike chemical fertilizers, vermicompost does not pollute the soil or water.

Improves soil fertility: It contains essential nutrients like nitrogen, phosphorus, and potassium, which are necessary for plant growth.

Uses organic waste: Kitchen waste, garden leaves, and other organic materials can be used as raw materials for vermicompost.

Conclusion:

Vermicompost is not only safe for the environment but also enhances soil quality and crop yield. It is an important part of organic farming and sustainable agriculture.

"अर्थशास्त्र – जीवन के हर क्षेत्र का आधार"

श्री संजय देवांगन
जनभागीदारी मार्गदर्शक (अर्थशास्त्र विभाग)

अर्थशास्त्र जीवन के हर पहलू से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ विषय है। चाहे समाज का क्षेत्र हो, राजनीति का, प्रशासन का या विज्ञान एवं तकनीक का हर क्षेत्र में अर्थशास्त्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। मानव जीवन से जुड़े अधिकांश निर्णय किसी न किसी रूप में आर्थिक सोच और संसाधनों के सही उपयोग पर आधारित होते हैं।

दैनिक जीवन में सीमित साधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना, आय–व्यय का संतुलन बनाए रखना, बचत करना, निवेश की योजना बनाना तथा भविष्य के लिए तैयारी करना ये सभी कार्य अर्थशास्त्र की व्यावहारिक समझ से ही संभव होते हैं। यही कारण है कि कहा जा सकता है कि अर्थशास्त्र केवल एक विषय नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक वैज्ञानिक और तर्कसंगत पद्धति है।

यदि अर्थशास्त्र को केवल रटकर पढ़ा जाए, तो उसका वास्तविक महत्व समझ में नहीं आता। लेकिन जब इस विषय को गहराई से समझकर, उदाहरणों के माध्यम से पढ़ा जाता है, तब यह विषय न केवल रोचक बनता है, बल्कि व्यक्ति के सोचने के दृष्टिकोण को भी व्यापक बनाता है। अर्थशास्त्र हमें तार्किक ढंग से सोचने, समस्याओं का विश्लेषण करने और सही निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करता है।

जो विद्यार्थी समाज, राजनीति, सार्वजनिक नीतियों, आर्थिक विकास तथा राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को समझना चाहते हैं, उनके लिए B.A. एवं M.A. स्तर पर अर्थशास्त्र एक अत्यंत उपयोगी और महत्वपूर्ण विषय है। यह विषय विद्यार्थियों को विश्लेषणात्मक सोच, नीति–निर्माण की समझ और व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

हमारे महाविद्यालय में B. A.एवं M.A. दोनों स्तरों पर अर्थशास्त्र विषय का सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है। विद्यार्थी इस विषय को अपनी रुचि के अनुसार चुनकर शिक्षा के क्षेत्र में PGT शिक्षक, सहायक प्राध्यापक, Indian Economic Service, Civil Services, बैंकिंग, योजना आयोग, शोध संस्थानों तथा अन्य अनेक क्षेत्रों में अपना उज्ज्वल कैरियर बना सकते हैं।

अतः अर्थशास्त्र न केवल रोजगार की संभावनाएँ प्रदान करता है, बल्कि यह जीवन को सही दिशा देने वाला एक सशक्त विषय भी है।

आजकल Fintek और AI कॉमर्स करियर को कैसे बदल रहे हैं

फिनटेक और AI आजकल कॉमर्स करियर को तेजी से डिजिटल और कुशल बना रहा है। ये पारंपरिक नौकरियों को बदलकर नए अवसर सृजित कर रहा है।

ऑटोमेशन का प्रभाव –

AI दोहराव वाले काम जैसे डेटा एंट्री, कैलकुलेशन और रिपोर्टिंग को स्वचालित करता है, जिससे कॉमर्स प्रोफेशनल्स रणनीतिक भूमिकाओं पर फोकस कर सकें। फिनटेक प्लेटफॉर्म्स जैसे UPI, Paytm ने पेमेंट्स को आसान बनाया है।

नए जॉब प्रोफाइल्स –

फिनटेक एनालिस्ट (₹ 6–12 लाख), AI फाइनेंशियल एनालिस्ट (₹ 8–15 लाख) और ब्लॉकचेन कंसल्टेंट जैसे रोल्स उभर रहे हैं। रोबो–एडवाइजरी और एल्गोरिदमिक ट्रेडिंग निवेश को स्मार्ट बना रही है।

जरूरी स्किल्स –

Python, SQL, डेटा एनालिटिक्स (Power BI), साइबरसिक्योरिटी और मशीन लर्निंग सीखना जरूरी है। ये स्किल्स फ्रॉड डिटेक्शन, रिस्क मैनेजमेंट और पर्सनलाइज्ड फाइनेंस में मदद करती हैं।

डॉ. स्वाती पाण्डेय

अतिथि व्याख्याता कॉमर्स

युवाओं के सपनों का बाजार : Share Market

आप जब भी अखबार या टेलीविजन देखे आपको केवल एक ही बात दिखेगी वो है शेयर बाजार। हर अखबार की सुर्खियाँ यही रहती हैं कि आज बाजार में बुल (Bull) ने उछाल पाया या बीयर (Bear) ने लुढ़काया। यह सुनने में जितना अजीब लगता है ना और आपके मन में यह सवाल भी उठ रहा होगा ना कि ये शेयर बाजार होता क्या है?

शेयर बाजार का तात्पर्य होता है कि मान लीजिए मेरे पास 100 रु. की कोई उद्योग (Company) है और मुझे अपने उद्योग को आगे बढ़ाने के लिए पैसों की आवश्यकता है अगर मैं बैंक या किसी व्यक्ति से ऋण लूँ तो मुझे काफी ब्याज के साथ पैसे वापस लौटाने होंगे। वहीं अगर मैं अपने उद्योग की कुछ हिस्सेदारी आम जनता में बेच दूँ और उन्हें अपने कंपनी का मुनाफा या घाटे का हिस्सेदार बना लूँ तो मुझे उद्योग के विकास के लिए पैसे भी मिल जायेंगे और इससे आम जनता (शेयर धारक) को भी फायदा होगा। तो हम इस प्रकार कह सकते हैं कि "शेयर बाजार वह उचित बाजार है जहाँ हम अपने उद्योग की कुछ हिस्सेदारी आम लोगों में बेच सकते हैं और शेयर धारक को अपने उद्योग के लाभ व हानि का हिस्सेदार बना सकते हैं।" या शेयर बाजार वह बाजार है जहाँ हम किसी उद्योग (Company) की हिस्सेदारी खरीद या बेच सकते हैं। इससे आपको ये भ्रम रहा होगा कि हर उद्योग शेयर बाजार से पैसे ले सकता है, परन्तु ऐसा नहीं होता है क्योंकि जिस कंपनी का बाजार पूँजीकरण (Market capitalization) या Net worth या valuation एक निश्चित सीमा के (अनुमानित 8,300 करोड़) तक होना चाहिए।

हमारे देश में शेयर बाजार का नियंत्रण "भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड" या SEBI (Securities and Exchange Board of India) के द्वारा किया जाता है।

हमारे देश में मुख्य रूप से दो शेयर बाजार (Stock Exchange) हैं, पहला NSE (National Stock Exchange) यह भारत का सबसे बड़ा Stock Exchange है जिसका Benchmark सूचकांक (Index) निफ्टी–50 है, जो इसमें सूचीबद्ध शीर्ष 50 कंपनियों के प्रदर्शन को दर्शाता है। दूसरा है BSE (Bombay Stock Exchange) यह एशिया का सबसे पुराना एवं बड़ा Stock Exchange है इसका बेंचमार्क सूचकांक (Index) Sensex (सेंसेक्स) है, जो इसमें सूचीबद्ध शीर्ष 30 कंपनियों के बाजार पूँजीकरण (Market Capitalization) पर आधारित होता है।

शेयर बाजार में आप अल्पकालिक या दीर्घकालिक समय के लिए पूँजी निवेश कर लाभ व हानि पा सकते हैं। इसके द्वारा आप कम पैसों में भी किसी कंपनी की हिस्सेदारी खरीद सकते हैं। शेयर बाजार के द्वारा हम अपनी वित्तीय स्थिति सुधार सकते हैं। इसके द्वारा युवाओं या

निवेशकों में वित्तीय समझदारी या वित्तीय जागरूकता की तार्किक सोच विकसित होती है। शेयर बाजार उद्योग व देश की अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग है। आपको शेयर बाजार के बारे में पढ़ कर ऐसा लग रहा होगा कि ये तो पैसा कमाने का आसान और अच्छा तरीका है, लेकिन आपको ये जानकर हैरानी होगी कि जैसे हर सिक्के के दो पहलू होते हैं वैसे ही इसके लाभ के साथ हानि भी है। आजकल के निवेशक इसे रातो–रात अमीर बनने का एक आसान माध्यम मानते है, जो कि बिल्कुल गलत है। कई निवेशक ऐसे भी हैं जो किसी से कर्ज लेकर शेयर बाजार में निवेश करते हैं, लेकिन शेयर बाजार में हानि होने से कर्ज के तले दब जाते है। कई बार ऐसा भी होता है जब कोई निवेशक या युवा वर्ग अशिक्षा और बाजार को जाने बिना निवेश कर बैठता है, जो उसके लिए एक घाटे का सौदा होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शेयर बाजार में निवेश करने के लिए ज्ञान होना आवश्यक है। निवेश करने के लिए पैसों की जरूरत तो होगी ही इसके लिए सबसे पहले युवाओं या निवेशक को अपने आय का स्रोत बनाना चाहिए। एक अच्छा निवेशक वही बनता है जो धैर्यवान और लालच नहीं करता है।

शेयर बाजार में निवेश करते समय अपनी तार्किक सोच, ज्ञान व बुद्धि का प्रयोग करना चाहिए। इस प्रकार समझकर और सफल निवेशक बनिये।

ओमप्रकाश

B.Sc.- 3rd year (Bio)

रासायनिक जादू

डॉ. ज्योति गोस्वामी
अतिथि व्याख्याता
रसायनशास्त्र विभाग

रसायन विज्ञान – सीखें और चमत्कार करें!

जादू और विज्ञान अक्सर साथ–साथ चलते हैं। वैज्ञानिकों के लिए कोई चमत्कार नहीं होते, और दिखने में अविश्वसनीय लगने वाली घटनाओं को आसानी से समझाया जा सकता है। आम आदमी के लिए, प्रयोगशाला के प्रयोग अविश्वसनीय और आकर्षक लगते हैं। यह लेख रसायन विज्ञान के कई रहस्यों से पर्दा उठाएगा। यहाँ बताए गए नुस्खों से आप आसानी से अपने दोस्तों को प्रभावित कर सकते हैं और खुद को एक जादूगर जैसा महसूस कर सकते हैं।

रसायन विज्ञान के नियमों का ज्ञान आपको अद्भुत रूपांतरण प्रदर्शित करने में सक्षम बनाता है, जो सभी को प्रभावित करेंगे। हम तीन ऐसे कारगर तरीके देखेंगे जिन्हें आप घर पर ही आजमा सकते हैं। ये बच्चों और बड़ों दोनों को आनंदित कर सकते हैं और लोगों को नई जादुई खोज करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। कुशल हाथों में, साधारण वस्तुएं भी आसानी से जादुई बन जाती हैं।

1. प्लेट पर बना ज्वालामुखीः

आप कुछ ही मिनटों में घर पर ही अपने सुप्त ज्वालामुखी को जगा सकते हैं। अगर यह ट्रिक सावधानीपूर्वक और सही तरीके से की जाए तो यह देखने में बेहद प्रभावशाली लगेगी।

आपको चाहिये होगा–

प्लास्टिकिन, पानी, सोडा, सिरका, लाल और नारंगी रंग का खाद्य रंग।

प्रयोग प्रक्रिया

a) एक निष्क्रिय ज्वालामुखी बनाएं।

प्लास्टिकिन से एक शंकु बनाएं जो ज्वालामुखी जैसा दिखे। इसे एक समतल प्लेट पर रखें। प्लेट ज्वालामुखी के आधार से बड़ी होनी चाहिए, ताकि लावा के विस्फोट के लिए जगह मिल सके। देखने में आकर्षक बनाने के लिए आधार को हरी घास से सजाया जा सकता है।

b) लावा तैयार करें।

ज्वालामुखी के गड्ढे में किचन सोडा डालें। मात्रा ज्वालामुखी के आकार पर निर्भर करती है। ज्वालामुखी के अंदरूनी हिस्से को 30% से अधिक न भरें। फिर इसमें फूड कलरिंग मिलाएं। रंग बहुत महत्वपूर्ण है। लाल और नारंगी रंग का मिश्रण सबसे अच्छा प्रभाव देता है। रंग जितना चमकीला होगा, लावा उतना ही प्राकृतिक दिखेगा। दर्शकों को यह ट्रिक दिखाने से पहले आपको पहले और दूसरे चरण को पूरा कर लेना चाहिए। इससे अधिकतम प्रभाव पड़ेगा।

c) विस्फोट करें।

दर्शकों को तैयार करने और उन्हें ज्वालामुखी के अनोखे, जादू के बारे में बताने के बाद, आप करतब दिखाना शुरू कर सकते हैं। धीरे–धीरे सिरका डालें और विस्फोट तथा दर्शकों के विस्मयकारी चेहरों को देखें। सिरका किसी आकर्षक पारदर्शी बोतल से डालना बेहतर होगा। सिरका देखने में साधारण पानी जैसा लगेगा। इससे दर्शकों का विस्मय और भी बढ़ जाएगा।

2. अग्निरोधी मुद्रा (नोट का न जलना)

यह आसान सी तरकीब हमेशा बहुत सफल रहती है। दर्शक इसे दोबारा देखना चाहेंगे, इसलिए आपके पास भरपूर सामग्री होगी।

आपको चाहिये होगा –

• एक नोट, पानी, शराब, नमक, चिमटी, कटोरा।

प्रयोग प्रक्रिया

a) जादुई घोल तैयार करें

पानी और अल्कोहल को 1:1 के अनुपात में मिलाकर मिश्रण तैयार करें। फिर इसमें एक चुटकी नमक डालकर अच्छी तरह मिला लें। इसे एक आकर्षक बोतल में भर लें, ताकि आप दर्शकों को यह जादुई तरल दिखा सकें।

b) पैसों को उस जादुई तरल में भिगो दें।

जब आपके सामने लोग इकट्ठा हो जाएं, तो कटोरे में घोल भरें। फिर नोट को उसमें डुबोकर कुछ देर के लिए छोड़ दें। ध्यान रहे कि उसे ज़्यादा देर तक न रखें, वरना निकालते समय वह मुड़ जाएगा और फट जाएगा।

c) नोट को आग लगा दें।

इस चरण में चिमटी का उपयोग करना बेहतर है। नोट को कसकर पकड़ें, लाइटर को उसके पास लाएँ और आग को तुरंत अपने से दूर कर लें। यह प्रक्रिया बहुत सावधानी से करें ताकि लौ आसपास की वस्तुओं को न छूए। जलना बहुत जल्दी बंद हो जाएगा और नोट को कोई

नुकसान नहीं होगा। ऐसा जादुई घोल में मौजूद तरल पदार्थों के गुणों के कारण होता है। लौ पानी को सुखाकर नोट को जलाने से पहले ही अल्कोहल जलकर खत्म हो जाता है।

आप दर्शकों से प्रयोग के लिए सहायता और अपने पैसे देने का अनुरोध कर सकते हैं। यह ट्रिक बेतरतीब ढंग से चुनी गई कागज की वस्तुओं के साथ भी की जा सकती है। खुली किताब के साथ भी यह कारगर साबित हो सकती है। अधिक जादू और रहस्य जोड़ने के लिए, सुरक्षात्मक औषधि से वस्तुओं को भिगोते समय आप मंत्रों का जाप कर सकते हैं।

3. बैंगनी धुआँ

यह रोचक रासायनिक प्रयोग अत्यंत मौलिक प्रतीत होता है। अभिक्रिया प्रक्रिया में लपटों और चिंगारियों के साथ गाढ़ा बैंगनी धुआं निकलता है।

आपको चाहिये होगा–

- एल्युमीनियम पाउडर, आयोडीन, पानी, प्रबलित कांच, धातु या सिरेमिक से बना एक कप, स्प्रे नोजल वाली पिपेट या बोतल।

प्रयोग प्रक्रिया

a) जादुई तरल तैयार करें।

आसुत जल का उपयोग करने से यह तरकीब अधिक कारगर होगी। आप इसे तैयार रूप में खरीद सकते हैं, या एक अलग रासायनिक प्रक्रिया द्वारा इसे स्वयं बना सकते हैं।

इस जादू के लिए आपको बस कुछ बूंद पानी की जरूरत होगी। इसलिए पानी मिलाने की विधि का अभ्यास पहले से कर लें। सुविधा के लिए आप स्प्रे नोजल वाली बोतल का इस्तेमाल कर सकते हैं। हालांकि, पिपेट से भी काम चल जाएगा।

b) प्रयोग करने के लिए स्थान का चयन करें।

इस प्रक्रिया से निकलने वाला धुआँ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है, इसलिए सुरक्षा नियमों का पालन करना आवश्यक है। सबसे जरूरी शर्त है कि जगह हवादार हो। वहाँ हवा आने–जाने के लिए वेंटिलेशन होना चाहिए। अगर आप घर पर बैंगनी धुआँ बनाने की कोशिश कर रहे हैं, तो दो बार सोच लें। अगर वेंटिलेशन नहीं है, तो बेहतर होगा कि आप यह प्रयोग घर के बाहर करें।

c) जादुई पाउडर बनाएं।

सिरेमिक कप में एल्युमीनियम के बुरादे का ढेर डालें। इसमें आयोडीन का घोल मिलाएं और धीरे से हिलाएं। कांच के बर्तन का उपयोग न करें, क्योंकि तापमान बढ़ने पर साधारण कांच टूट जाएगा।

d) बैंगनी धुआं उत्पन्न करें।

जादुई पाउडर को आग पकड़ने में मदद करें। धीरे–धीरे जादुई तरल को बूंद–बूंद करके डालें। मिश्रण तेजी से चमकदार लपटों में बदल जाएगा, चिंगारियां उड़ेंगी और गाढ़ा, बैंगनी धुआं निकलने लगेगा।

"क्यों?" इस प्रश्न का उत्तर अत्यंत सरल है। जल उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है और आयोडीन को सक्रिय करता है। एल्युमीनियम से सुरक्षात्मक परत हट जाती है और अभिक्रिया होती है। परिणामस्वरूप, हैलोजन के ऊर्ध्वपातन के साथ दहन होता है।

मैग्नीशियम पाउडर से भी ऐसा ही परिणाम मिलेगा। एल्युमीनियम (या मैग्नीशियम) के बुरादे और आयोडीन के अनुपात को बदलकर आप अधिक धुआँ या अधिक आग पैदा कर सकते हैं। यदि आप बहुत अधिक आयोडीन मिलाते हैं, तो अभिक्रिया की ऊष्मा इस हैलोजन के ऊर्ध्वपातन में लग जाएगी और मिश्रण में आग नहीं लगेगी। बस बहुत अधिक धुआँ निकलेगा।

हमें उम्मीद है कि यह लेख आपको अन्य जादू के करतबों को स्वयं आजमाने के लिए प्रेरित करेगा। रसायन विज्ञान का अध्ययन करने से आपको कई रोचक तथ्य जानने को मिलेंगे। प्राप्त ज्ञान लोगों का मनोरंजन करने में काम आ सकता है, और साथ ही घरेलू समस्याओं को हल करने में भी उपयोगी हो सकता है।

रसायनशास्त्र के भारतीय वैज्ञानिक

डॉ. नावेद सिद्दीकी
अतिथि व्याख्याता
रसायनशास्त्र विभाग

भारतीय रसायन वैज्ञानिक जिन्हें नई पीढ़ी को जानना चाहिए आज का युवा वर्ग विज्ञान और तकनीक में तेजी से आगे बढ़ रहा है। इंटरनेट, सोशल मीडिया और अंतरराष्ट्रीय समाचारों के कारण हम आइंस्टीन, मैरी क्यूरी, न्यूटन जैसे विदेशी वैज्ञानिकों के नाम तो सहज ही ले लेते हैं —लेकिन क्या हम अपने ही देश के उन महान रसायन वैज्ञानिकों को उतनी ही गंभीरता से जानते हैं, जिन्होंने भारत की वैज्ञानिक नींव रखी ?

भारत में रसायन विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि दवाइयों के विकास, उद्योगों की स्थापना, कृषि, जैव–प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष अनुसंधान तक इसका प्रभाव पहुँचा है। यद्यपि ये सभी भारतीय वैज्ञानिक अपने–अपने क्षेत्रों में अत्यंत प्रसिद्ध और सम्मानित रहे हैं, फिर भी आज की नई युवा पीढ़ी को इनके जीवन, संघर्ष और उपलिब्धयों के बारे में और गहराई से जानने की आवश्यकता है, ताकि वे इनसे प्रेरणा लेकर विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ सकें ।

- **डॉ. प्रफुल्ल चंद्र रे** –(1861–1944) जिन्हें भारतीय रसायन विज्ञान का जनक कहा जाता है उन्होने न केवल महत्वपूण रासायनिक खोजें कीं, बल्कि भारत की पहली औषधी कंपनी की स्थापना कर स्वदेशी उद्योग की नींव रखी।

- **प्रो. सी. एन. आर. राव** –(1934–वर्तमान) भारत के प्रमुख रसायन वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने ठोस–अवस्था रसायन और उच्च–ताप सुपरकंडिक्टवटी पर विश्व–स्तरीय शोध किया। उन्होंने यह समझने में मदद की कि पदार्थो की संरचना उनके विद्युत और चुंबकीय गुणों को कैसे प्रभावत करती है। उन्होंने भारत में नैनो–विज्ञान और उन्नत सामग्री अनुसंधान को भी बढ़ावा दिया, कई संस्थानों की स्थापना में भूमिका निभाई और हजारों छात्रों को प्रेरित किया। इन्हीं असाधारण योगदानों के लिए उन्हें भारत रत्न सहित अनेक राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए।

- **डॉ. वेंकटरामन रामकृष्णन** –(1952–वर्तमान) एक प्रसद्ध जीव–रसायन वैज्ञानिक हैं, जिन्हें 2009 का नोबेल पुरस्कार (रसायन विज्ञान) राइबोसोम की परमाणु–स्तरीय संरचना खोजने के लिए मिला। उनके शोध में यह समझ संभव हुई कि कोशिकाएँ प्रोटीन कैसे बनाती हैं और एंटीबायोटिक दवाएँ बैक्टीरिया पर कैसे असर करती हैं। उनका कार्य आधुनिक जैव–रसायन और औषधि–विकास के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

- **डॉ. असीमा चटर्जी** –(1917–2006) भारत की अग्रणी जैव–रसायन/औषधीय रसायन वैज्ञानिक जिन्होंने मलेरिया और मिर्गी (एपिलेप्सी) के उपचार में उपयोगी दवाओं के विकास में महत्वपूण योगदान दिया। उनके शोध से किफायती और प्रभावी औषधियाँ बनाने में मदद मिली, जिससे लाखों लोगों को लाभ पहुँचा। भारतीय विज्ञान में उनके असाधारण योगदान के लिए उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

- **डॉ. जी. एन. रामचंद्रन** –(1922–2001) एक महान भारतीय जैव–रसायन और संरचनात्मक जीवविज्ञान वैज्ञानिक थे, जिन्होंने प्रोटीन की त्रि–आयामी संरचना समझने के लिए प्रसिद्ध "रामचंद्रन प्लॉट" विकसत किया। यह ग्राफ आज भी प्रोटीन मॉडलिंग और जैव–अणु संरचना विश्लेषण की आधारशिला माना जाता है। उनका कार्य आधुनिक जैव–रसायन और जैव–भौतिकी के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा।

- **डॉ. शांति स्वरूप भटनागर**–(1894–1955) आधुनिक भारत में वैज्ञानिक अनुसंधान के प्रमुख वास्तुकारों में से एक थे और CSIR (Council of Scientific & Industrial Research) की स्थापना व विकास में उनकी केंद्रीय भूमिका रही। उन्होंने उद्योगोन्मुख शोध को बढ़ावा देकर विज्ञान को राष्ट्र–निमार्ण से जोड़ा। उनके सम्मान में भारत सरकार ने प्रतिष्ठित "शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार" की शुरुआत की, जो आज भी युवा वैज्ञानिकों के लिए सर्वोच्च सम्मानों में गिना जाता है।

- **डॉ. दशन रंगनाथन** –(1941–2001) एक प्रसिद्ध भारतीय कार्बनिक/जैव–कार्बनिक रसायन वैज्ञानिक थे, जिन्होंने प्रोटीन की संरचना और कोडिंग को समझने के लिए कृत्रिम मॉडल अणुओं (model systems) पर महत्त्वपूर्ण शोध किया। उनके कार्य से यह स्पष्ट हुआ कि जैव–अणु किस तरह अपना आकार ग्रहण करते हैं और कार्य करते हैं।

उनका योगदान भारत में आधुनिक जैव–रसायन और आणविक संरचना अध्ययन को मजबूत करने वाला माना जाता है।

- **डॉ. टी. आर. गोविंदाचारी** –(1915–2001) भारत के प्रमुख प्राकृतिक उत्पाद (Natural Products) और औषधीय रसायन वैज्ञानिक थे। उन्होंने औषधीय पौधों से सक्रिय रासायनिक यौगकों को अलग कर उनकी संरचना निर्धारित की, जिससे भारतीय वनस्पति–आधारित दवा अनुसंधान को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली। उनका कार्य फार्मास्यूटिकल और जैव–रसायन के क्षेत्र में अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है।

- **डॉ. ए. वी. रामराव** –(1935–वर्तमान) भारत के प्रमुख औषधीय रसायन वैज्ञानिक और उद्योगवेत्ता थे। उन्होंने किफायती और प्रभावी दवाओं के विकास में महत्वपूण भूमिका निभाई, जिससे भारतीय फार्मास्यूटिकल उद्योग को वैश्विक पहचान मिली। साथ ही उन्होंने शोध और उद्योग के बीच सेतु बनाकर देश में वैज्ञानिक नवाचार को प्रोत्साहित किया।

- **डॉ. सौरभ पाल** –(1957–वर्तमान) भारत के प्रमुख सैद्धांतिक और संगणनात्मक रसायन (Theoretical & Computational Chemistry) वैज्ञानिक हैं। उन्होंने क्वांटम रसायन और आणविक संरचना की गणनात्मक विधियों से रासायनिक अभिक्रियाओं को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने भारतीय विज्ञान संस्थानों में उच्च–स्तरीय शोध को आगे बढ़ाया और युवा वैज्ञानिकों को इस आधुनिक क्षेत्र में शोध के लिए प्रेरित किया।

जनऊला–हाना

डॉ. सस्मिता बरगाह
सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)

धान का कटोरा कहलाने वाला हमारा छत्तीसगढ़ अपनी सांस्कृतिक विविधता और विरासत से भी भरापूरा है। हमारे महाविद्यालय पत्रिका **"प्रज्ञा"** के इस अंक के माध्यम से साझा कर रही हूं छत्तीसगढ़ के प्रचलित प्रश्नोत्तरी जिसे जनऊला कहते हैं और कुछ मुहावरे (हाना) भी। प्रस्तुत है।

पहले जनऊला पढ़ें, सभी के उत्तर इसी अंक में हैं।

1. तरी पचरी उपर पचरी, माझा म खेलय मोंगरी मछरी।
2. नानकुन टुरी, कुद – कुद के पार बांधय।
3. न बोंगे म बोंगाय, न काटे म कटाय।
4. पेट खलखल, पूंछी गाभिन।
5. ददा बइठांगुर, बेटा पुचपुचहा।
6. लाल बइला बइठे हे, करिया बइला भागथे।
7. पहाड़ उपर रुख, रुख उपर बेंदरी।
8. पेड़ लोहा, फूल सोनहा, फरय चांदी ।
9. जवानी म हरियर, बुढ़हाती करिया।
10. तीन आंगुर के खेत म बत्तीस नांगर।
11. बीच तलाब म कंचन थारी।
12. नानकुन लईका, राजा ल रोवाय।
13. नानकुन लईका, राजा संग खाए बइठे।
14. नानकुन डबिया म लाल गुड्डू।
15. पाना गुजगुल, फर लडुआ। नई जानही तेखर मुड़ मुड़वा।
16. एक थारी दू अंडा, एक तातेतात दुसर ठंडा।
17. पेड़ ओखर नार–गेंवार, पाना ओखर थारी।
    फूल ओखर पिंवरा, फर जेखर भारी।
18. पाना हे टिरी–टिरी, फर हे बांटी। नई जानही तेन बेंदरा के नाती।
19. पांच नंगरिहा, बत्तीस बैला, एक तुतारी।
20. अइंठ–गोठ के कपार म बइठे।

उत्तरः– 1.जीभ, 2.सूई, 3.छइहां, 4.चांटी, 5.हंउला, लोटा, 6.आगी–धुंआ, 7.जूंहा 8.बमरी पेड़, 9.जामुन, 10.दांत, 11.पतरी, 12.धनमिर्चा, 13.मख्खी, 14.मूंगफली, 15.गोंदली, 16.सूरज चंदा, 17.मखना, 18.आंवला, 19.अंगुली, दांत और दातुन, 20. पगड़ी

कुछ छत्तीसगढ़ी मुहावरे

1. मही मांगे जाए अउ ठेकवा लुकाए
2. एक हाथ के खीरा, नौ हाथ के बीजा
3. दर ठेंगा उठ रेंगा
4. जब के आमा तब के लबेदा
5. आय नांग पुजय नहीं भिंभोरा पूजे जाय।
6. मुंह के लबर–लबर, जांगर के चोर।
7. चोर ले मोटरा उतियाईल।
8. दूध के दूध गए, दुहनी के दुहनी।
9. लंका म सोन के भूती।
10. भेंट लेच त पा लगी, नही त का लागी।
11. बड़े संग रहबे त खाबे बीरा–पान, छोटे संग रहय त कटावय दुन्नो कान।
12. हो–हो गाय चराय, दूध–भात कभू नई खाय।
13. जइसन–जइसन घर–दुआर तैइसन–तैइसन फइका, जइसन–जइसन दाई–ददा तैइसन–तैइसन लइका।
14. जइसन देवता, तैइसन पूजा।
15. चटकन के उधार झन राखव।
16. चिमनी हावै त तेन नहीं।
17. भैंइसा के सिंग, भैंइसा ले गरु।
18. बाढ़े बर बाढ़े हावस, फेर खुंटा बरोबर ठाढ़े हावस।
19. दूध–दही आन खाय, ठेकवा बपूरा मार खाय।
20. गांव के चिन्हार, शहर के मितान।
21. भूख न चिन्हे बासी–भात, नींद न चिन्हे मरघट–घाट, मया न चिन्हे जात–कुजात।
22. एक ठन हर्रा, गांव भर खोंखी।
23. एक दिन के पहुना, दु दिन के पाही, अकतहा म इज्जत जाही।
24. भाई भेद, लंका भेद।
25. हाथी के पेट सोहांरी म नई भरये।

"समय के आँगन में उड़ती तितली सी लड़की"

श्रीमती इन्दु कौशल
सहायक प्राध्यापक वनस्पतिशास्त्र

समय के आंगन में उड़ती तितली सी लड़की,
कभी होती थी, सीधी शांत, शालीन,
और रहती डरी सहमी सी,
हमेशा बंद रखती अपने सपनों की खिड़की ।

दुनियाँ बदली, तकनीक बदली,
और लड़की की तस्वीर भी बदली,
आँखो में है नित नये सपने,
सामने है नई चुनौती
किंतु अब अपने होने का सबूत है, देती।

बड़े खतरे हैं राहों में,
उन राहों पर बेखौफ आगे बढ़ चली,
सभी कुछ से जुझने की हिम्मत है करती,
घर परिवार समाज या हो देश–दुनियाँ
अपने अस्तित्व की परिभाषा, हर जगह है लिखती।

अपनी पहचान पर फख्र,
लड़की होने का गर्व है करती,
आज नहीं वह गाना चाहती,
अगले जनम मोहे बिटिया ना कीजो,
समय के आंगन में उड़ती तितली सी लड़की।

A.I. v/s Human

इंसान को इंसान की कदर नहीं,
reels में छुप गए real इमोशन कही,
जिंदगी के अनुभव बन गए social media के status,
A.I. ने छीनी identity,
इंसान को ही इंसान की पहचान नहीं।

हौसला

तू हौसले तो बुलंद कर ,
रास्ता खुद ही बन जाएगा ।
तू आगे तो बढ़ ,
मंजिल पर खुद ही पहुंच जाएगा।
तू मेहनत तो कर ,
तेरा परचम भी लहराएगा ।
तू डर से ना डर,
डर फिर खुद ही भाग जाएगा ।
तू जीत लेगा फिर पूरी दुनिया को ,
और अगला सिकंदर तू ही कहलाएगा ।

Miss Prachi Gupta
Asstt. Prof.(J.B.S.)

"अधूरे सपने"

सोचा था हमने,
सपने होंगे पूरे।
महंगाई की आंधी ऐसी आई,
कि सपने रह गए अधूरे।

फिर भी सपने देखना न छोड़ा,
पथ पर हम डटे रहे।
संघर्ष करेंगे, मेहनत करेंगे,
हर मुश्किल से लड़ते रहेंगे।

अच्छे दिन हम खुद बनाएँगे,
हौसलों को कभी न तोड़ेंगे।
अपने अधूरे सपनों को
एक दिन जरूर पूरा करेंगे।

Hridesh Kaushik
Asstt. Prof.(J.B.S.)

छात्र जीवन की शायरी

छात्र जीवन है दीपक सा जलता,
रातें जागकर सपने संवारता।
किताबों के पन्नों में खो जाता,
ज्ञान की धारा में बहता जाता।

परीक्षाओं की आग में तपता हूँ,
सपनों के पंख लगा उड़ता हूँ।
दोस्तों संग हँसी, कभी उदासी भी,
फिर भी आगे बढ़ता, कभी न रुकता हूँ।
समाजशास्त्र की गहराई में डूबा,
मार्क्स, वेबर , श्रीनिवास को समझा हर रूह।
मेहनत का फल मिलेगा एक दिन,
छात्र से बनेगा समाज का सिपाही तू।

अंकुर शुक्ला
अतिथि व्याख्याता (समाजशास्त्र विभाग)

नई किताब की दुनिया

नई किताब आई है हाथों में,
खुलते ही पन्नों में बसी एक नई दुनिया।
हर शब्द जैसे बहता हुआ संगीत,
हर कहानी में छुपा अनुभवों का गीत।

खुशबू उसके पन्नों की जैसे खेतों में फूलों की,
जिसे महसूस करते ही मन में उठती उत्सुकता की लहर।
अक्षरों की गलियों में हम घूमते जाएँ,
हर मोड़ पर नए विचारों से मिलते जाएँ।

हर कहानी हमें ले जाती दूर,
जहाँ सपनों की नदियाँ बहती,
जहाँ कल्पना की उड़ान भरती,
जहाँ हर पात्र हमें नया सिखाता, नया दिखाता।

पढ़ते हुए लगता है, समय भी थम गया,
मन और आत्मा दोनों का मिलन हुआ।
नई किताब, नई यात्रा की शुरुआत,
हर पन्ना सिखाए हमें, बढ़ाए मन की सौगात।

तो चलो, इस किताब के साथ खो जाएँ,
नई दुनिया, नई सोच, नई खुशियाँ पाएँ।

भारती विश्वकर्मा
B.Sc.-3rd Year

Life

Way of life is to face obstacles
Life is all about practical's....

Just learn way to manage struggles
In order to cope up with all juggles

Life is an art of drawing without eraser
Just draw beautiful memories to make it easier....

In this fair way of struggling
Life is all about the way of handling....

Criteria to manage depression
Life makes an unbeatable impression....

Life makes us capable to face complexities
Life is a way to fulfill our duties

Life provides motivation in every path
Life provides solution to be smart

Life is all about adventures
Life is the biggest mentor....

Shreya Pandey
B.Sc.-3rd year

मैं

खुद को समझाऊँगा मैं,
फिर खुद ही सम्हल जाऊँगा मैं।

खुद से संघर्ष करूँगा मैं,
फिर खुद पर विजय पा लुँगा मैं।

कंकड़—पत्थर के मार्ग पर चलकर,
खुद, पुष्पों का पथ बनाऊँगा मैं।

कुछ उम्मीदों के सहारे,
दुनिया को रोशन बनाऊँगा मैं।

एक जलती हुई लौ को,
शोला बनाऊँगा मैं।

बहने दो इन अश्रुओं को,
इनको बहाकर महा सागर बनाऊँगा मैं।

खुद को बदलकर,
दुनिया में बदलाव लाऊँगा मैं।

रामानंद यादव
M.A.- 1st Sem History

प्रकृति

आओ–आओ प्रकृति का उपकार गाएँ,
धरा को माँ मानकर उसका श्रृंगार रचाएं ।।

नदियाँ, झरने, कलकल धारा,
वन–उपवन का सारा नजारा ।।
फूलों की खुशबू महके प्यारी,
प्रकृति हमको लगे हमारी।।

पंछी ऊँचे–ऊँचे जाते,
सीमा–सागर तक पहुँचते गाते ।।
मधुर–सुबह की किरणें छाई,
प्रकृति हर ओर रंग लाई ।।

झीलें स्वच्छ दर्पण जैसी,
हरियाली देती खुशबू वैसी ।।
पवन हमें संदेश सुनाएँ,
प्रकृति से प्रेम सदा निभाएँ ।।

शत्रुहन कुमार यादव
B.A. 3rd Year

My Inner Self

She is the one
who holds a pure heart that vibrates in grace.
She is the one
who sees herself in others' reflection.

At times she wanders
through rumination,
She is the one
who weighs more of others' perceptions.

But beneath the weight
of eyes and voices,
she holds a strength
no rumour can break.

Her spirit does not rest
in narrow halls.
It longs for skies
where stars belong.

The waves of storm
come in her path.
She trembles,
afraid of being harmed.

But her steady heartbeat
of courage shines warm.
She is the one
blooming from mud, radiating charm.

Minakshi Sahu
B.Sc. 1st Sem. (Maths)

My Inner Voice

Sometimes, I want to cry out in silence
Sometimes, I want to hug myself
Sometimes, I want to laugh at the shape
of my mistakes
Sometimes, I just want to adore myself.

Sometimes, I need nothing to speak
Sometimes, silence brings more peace
Sometimes, life needs a break
Sometimes, it asks for ease.

Sometimes, I want to stand at the window
and count the city lights
Sometimes, I tuck my knees to chest
and want to feel how small I used to be.

Sometimes, I want everything
Sometimes, I need nothing
Sometimes, I wander within
Sometimes, I just want the soft hush
of my quiet.

Minakshi Sahu
B.Sc. 1st Sem. (Maths)

दर्द का सावन

रास्ता मिले जब दर्द को,
आँसू नदियों–सी बहती है।
दिल के हर कोने से चीख उठती है,
तन्हाई तब सहारा बनती है।

अंतरमन की आवाज निकल आती है,
निरवता सब कुछ सुन लेती है।
मानो सहला रही हो,
सिसकियों में भी सुकून भरती है।

साँसों की गहराई बढ़ जाती है,
मन में सागर–सी शांति छा–जाती है।
जब दर्द के सावन में,
आँसुओं की बारिश हो जाती है।

हाय, इस प्रकृति की, रीत अनोखी।
इस दुख भरी दरिया में
सहला कर, गले से लगा लेती है।

मिनाक्षी साहू
B.Sc. 1st Sem. Maths

" अंधेरे का उपहार "

खींचा तुमने मुझे उन राहों पर,
जिनकी चाह मैंने कभी न की थी,
पर उन आग की लपटों के भीतर,
एक दिया वरदान धीरे–धीरे जगी थी।

जो अँधेरा कभी डराता था मुझे,
अब बन गया है एक शांत ठिकाना द्य
जहाँ बंद आँधियाँ रो सकी खुलकर,
और सन्नाटे ने दिया सुकून पुराना ।

जो डर कभी बेड़ियाँ बनकर था,
वो अब चुपचाप टूट गया कहीं,
रात संग चलती हूँ अब मैं ऐसे,
जैसे वो खुद सूरज हो यही।

हर दुख, हर याद, हर पीड़ा के बावजूद,
एक अजीब–सी कृतज्ञता आई है हृदय में।
जानती हूँ अब उन सबके बीच भी,
तुमसे मिली हूँ मैं अपने ही प्रकाश के क्षण में।

कल्याणी यादव
B.Sc.- 1st Sem. Maths

नारी–सशक्तिकरण

कब तक होगा नारी–शोषण
उठ खड़े होंगे हजारों दुःष्शासन
अब करना ही होगा इनका मर्दन
हे नारी! अगर दोहराना नहीं है द्रोपदी
वस्त्रहरण
छोड़ दो कोमलता का आवरण
आज करो इन दुरात्माओं का भक्षण
जिन्होंने किया तुम्हारा मान हनन
व्यर्थ नहीं है तुम्हारा जीवन
तुम ही करती हो जीवन का सृजन

आज करो एक और भार वहन
न करो ये अत्याचार सहन
करना ही होगा इन पापियों का दहन

आज दो खुद को वचन
नहीं करोगी अपना जीवन दूसरों को अर्पण
करो आज इनका मर्दन
करो आज इनका मर्दन

श्रेया पांडेय
B. Sc.- 3rd year Bio

खोया बचपन

बाग–बगीचे बैठे हैं लगाए आस,
मैदानों को है मासूम कदमों का इंतजार।
हवा पूछती है हर रोज सवाल,
कहाँ गए वो बच्चों के हँसी के तार?

कंचे, पिट्ठु, गिल्ली–डंडा लन्गड़ी
अब भी पुकारें हैं उनके नाम।
बुला लो उन्हें जो खोए हैं,
वीडियों– गेम की लत में सुबह शाम।

बचपन की कहानियाँ धीरे– धीरे खो रही हैं,
सृजन की खुशबू और कल्पना की फुहारें।
बुला लो उन्हे, जो छुप गए हैं पर्दों के उस पार,
न छीने उनसे खेलों का रंगीन संसार ।

छोटे छोटे अनुभवों की मिठास भी गई कहीं
हर पल जल्दी का चाह, पर दिल है, खाली– खाली।
बुला लो उन्हें, जो खो गए हैं,
रिल्स और नोटिफिकेशन की लहरों में कहीं।

दोस्तों संग झगड़े समझौते और हँसी
सब हो गया अब डिजिटल की सदी ।
स्क्रीन की चमक ने ली बचपन की राहें,
कंचों की टकराहट और गली की आहे।

कभी तो लौटे वो हँसी की आवाज,

फिर महके गलियों में बचपन का अंदाज।

धमा – चौकड़ी मचे चहूँ ओर

कहां खो गए हैं, वो नाचते मोर?

मिनाक्षी साहू

B.Sc.- 1st Sem. maths

सजगता

नोट–यह कहानी पूरी तरह से काल्पनिक है और जीवन में सजग होने के लिए प्रेरित करती है

एक गांव में एक तालाब था उसमें एक मगरमच्छ रहता था। गांव वालो ने उस इलाके में आना जाना वर्जित रखा था। और तालाब के अंदर जाल बिछा कर रखा था।

एक दिन छोटा बच्चा खेलते– खेलते तालाब के पास पहुंच गया मगरमच्छ ने बच्चे को आवाज लगाई और बोला कि थोड़ा सा जाल हटा दो तो मैं बाहर निकल जाऊंगा, छोटे बच्चे ने कहा– तुम मुझे पकड़ कर खा गए तो, मगरमच्छ ने कहा – तुम थोड़ा सा जाल हटा देना और फिर भाग जाना, बच्चे ने जैसे ही पीछे से जाल हटाए मगरमच्छ ने अपनी पूछ बच्चे के ऊपर मारी और उसे मुंह में पकड़ लिया। बच्चे ने कहा तुमने कहा था कि मुझे नहीं खाओगे मगरमच्छ ने जवाब दिया कि विधि का विधान (ऐसा ही होता हैं) यही है। बच्चे ने कहा तुमने मेरे साथ धोखा किया है।

मगरमच्छ ने कहा तीन लोगों से पूछते हैं अगर उन्होंने भी कह दिया कि विधि का विधान यही है तो मैं तुम्हें खा जाऊंगा वरना तुम्हें छोड़ दूंगा।

वहां से एक कौंवा जा रहा था बच्चे ने उसे रोका और अपना सारा वृतांत बताया कौंवा ने कहा कि यह सही बात है विधि का विधान यही है। फिर कुछ देर बाद एक गधा वहां से गुजर रहा था उसने गधे को रोका और फिर से सारा वृत्तांत बताया गधे ने भी कहा कि हां यह सही बात है कि विधि का विधान यही है।

अब बच्चा पूरी तरह से हताश हो चुका था किसी तीसरे व्यक्ति का वह इंतजार ही कर रहा था उतने में एक खरगोश वहां से गुजर रहा था खरगोश को उसने रोका और पूरा वृत्तांत सुनाया, खरगोश ने कहा बच्चा सही हैं, तब बच्चे को कुछ राहत आई और मगरमच्छ ने कहा कैसे बताओ ? खरगोश ने कहा– बच्चे को अपने मुंह से छोड़ो फिर मैं तुम्हें बता पाऊंगा। मगरमच्छ ने कहा कि तुम मुझे बेवकूफ समझते हो तुम बच्चे को लेकर भाग जाओगे। खरगोश ने कहा– तुम तो इतने बड़े हो और हम इतने छोटे हम भला कैसे भाग पाएंगे यह कहकर खरगोश ने मगरमच्छ के अहंकार को बढ़ाया। और जैसे ही मगरमच्छ ने बच्चे को मुंह से छोड़ा खरगोश बच्चे को भागो कहकर भागने लगे, तो मगरमच्छ ने कहा कि तुमने मुझे धोखा दिया तब खरगोश ने जवाब दिया कि विधि का विधान (अर्थात ऐसा ही होता है) यही है।

पर कहानी अभी खत्म नहीं हुई है, खरगोश और बच्चा मिलकर गांव जाकर सब गांव वालों को बुलाकर तालाब के किनारे लेकर आते हैं कि वह मगरमच्छ जाल मे फंस चुका है।

सब लोग खुशी मनाते हैं तालाब के किनारे नाचते हैं जब गांव वाले तालाब के किनारे आते हैं तो उनके साथ कुत्ते भी साथ में आते हैं और खुशी में नाचते हुए कुत्तों की नजर खरगोश पर पड़ती है और वह उसे दबोच कर खा जाता है।

कहानी की सीख – सुख और दुख में हम अपनी सजगता खो देते हैं। खुशी में गांव वालों की सजगता खो जाने से कुत्ते ने खरगोश को खा लिया। केवल सजग रहकर हम जीवन में आनंद प्रेम शांति और खुशी का अनुभव कर सकते हैं।

श्रीमती रानू अग्रवाल

अतिथि व्याख्याता गणित

बोलती हुई किताब

भारती नाम की एक लड़की थी। उसे मोबाइल में खेलना तो पसंद था, लेकिन किताबें पढ़ना बिल्कुल नहीं।

उसकी माँ हमेशा कहती– "किताबें हमारी दोस्त होती हैं"

लेकिन भारती हंसकर बात टाल देती।

एक दिन स्कूल की लाइब्रेरी में भारती को एक पुरानी, सुनहरी कवर वाली किताब मिली।

उसका नाम था –"कहानियों का खजाना"।

अजीब बात यह थी कि किताब जैसे उसे देख रही हो।

भारती ने सोचा, चलो खोलकर देखते हैं।

जैसे ही उसने पहला पन्ना खोला, किताब फुसफुसाई –

"मैं तुम्हें सिर्फ पढ़ने के लिए नहीं, सिखाने के लिए आई हूँ "।

भारती डर गई, पर आवाज बहुत प्यारी थी, इसलिए वह सुनने लगी।

किताब की दुनिया – किताब ने उसे एक–एक कहानी में नए दोस्त, नए स्थान, और नए अनुभव दिखाए।

कभी वह जंगल में पहुँच जाती, कभी समुद्र की गहराई में, कभी सितारों के बीच उड़ने लगती।

हर कहानी के अंत में किताब कहती – "देखों" ?

किताबें सिर्फ कागज नहीं, दुनिया के दरवाजे हैं।

बड़ा बदलाव – धीरे–धीरे भारती की आदत बदलने लगी।

अब वह रोज लाइब्रेरी जाती, नई किताब ढूँढती, और जो पढ़ती, उसे दोस्तों को सुनाती।

स्कूल की टीचर ने भी कहा,
"भारती, तुम तो एक छोटी – सी लेखिका बन रही हो।"
अंत – एक दिन किताब ने कहा,
"अब मुझे किसी और बच्चे को रास्ता दिखाना है।"
और वह अचानक हवा में चमकते हुए गायब हो गई।
पर भारती मुस्कुराई –
क्योंकि अब उसे पता था कि –
किताब बोलती नहीं, लेकिन बहुत कुछ सिखा जाती है।

भारती विश्वकर्मा
B.Sc.-3rd Year

शिक्षक के माध्यम से अपने बातों को प्रगट करना

प्रिय गुरु जी,

मुझे कुछ बातें कहना है उन सभी विद्यार्थियों से, आप कृपया करके उन सभी बच्चों को अपने माध्यम से सिखाएँ। आप शिक्षक हो, तो बच्चे अच्छे तरीके से सीखेंगे। उन सभी को ऐसी शिक्षा दे जिससे वे सब सच्चा इंसान बन सके। सभी व्यक्ति न्यायप्रिय नहीं होते और न ही सब सच बोलते है। सभी बच्चे कभी–न–कभी सीख ही लेंगे। उन सभी को यह अवश्य सिखाएँ कि अगर दुनिया में बदमाश लोग होते हैं तो अच्छे नेक इंसान भी होते हैं। अगर स्वार्थी राजनीतिक है तो जनता के हित में काम करने वाले देशप्रेमी भी होते हैं। उन सभी को यह भी सिखाएँ कि अगर दुश्मन होते हैं, तो दोस्त भी होते हैं। मुझे पता है "बच्चों या विद्यार्थियों" को ये सब सिखाने में समय लगेगा। परंतु हो सके तो उन सभी विद्यार्थियों को यह जरूर सिखाएँ कि मेहनत से कमाया एक पैसा भी बिना मेहनत के मिले नोटों की गड्डी से कहीं अधिक मूल्यवान होता है।

उन सबको हार के बाद जितना सिखाएँ और जीत में खुश होना सिखाएँ, राग – द्वेष से दूर रहना सिखाएँ और मुसीबत में हँसकर लड़ना सिखाएँ। अगर संभव हो तो उन सबको किताबों के मनमोहक दुनिया में अवश्य ले जाए साथ–साथ उन्हें प्रकृति की सुंदरता, नीले आसमान में उड़ते आजाद पक्षी, सुनहरी धूप में गुनगुनाती मधुमक्खियाँ और पहाड़ के ढलानों पर खिलखिलाते जंगली फूलों की हँसी को भी निहारने दें।

और उन सभी विद्यार्थियों को सिखाएँ कि नकल करके पास होने से असफल होना बेहतर है। वे सभी भले लोगों के साथ नेक व्यवहार करे और बदमाशों को करारा सबक सिखाएँ। उन सबको सिखाएँ कि वे हर एक बात को धैर्यपूर्वक सुने, फिर उसे सत्य की कसौटी पर कसे और केवल अच्छाई को ही ग्रहण करे।

जागृति विश्वकर्मा

B.Sc. 1st Sem. (Bio)

"संघर्ष.... ही जिंदगी है.... ।"

समुद्र के किनारे जब एक लहर आयी तो एक बच्चे का चप्पल अपने साथ बहा ले गयी। बच्चा रेत पर अपनी उँगली से लिखता है।

"समुद्र चोर है", उसी समुद्र के एक दूसरे किनारे एक मछुआरा मछली पकड़ रहा होता है। वह उसी रेत पर लिखता है "समुद्र मेरा पालनहार है।"

एक युवक समुद्र में डूब कर मर जाता है। उसकी माँ रेत पर लिखती है "समुद्र हत्यारा है।"

एक दूसरे किनारे एक गरीब बुढ़ा टेढ़ी कमर लिए रेत पर टहल रहा था । उसे एक बड़े सीप में एक अनमोल मोती मिल गया। वह रेत पर लिखता है "समुद्र दानी है।"

अचानक एक बड़ी लहर उठती है और सारे लिखा मिटा देती है। लोग जो भी कहे समुद्र के बारे में लेकिन विशाल समुद्र अपनी लहरों में मस्त रहता है। अपने उफान और शांति वह अपने हिसाब से तय करता है। अगर विशाल समुद्र बनना है तो किसी के निर्णय पर अपना ध्यान ना दे। जो करना है अपने हिसाब से करे जो गुजर गया उसकी चिंता में ना रहे। हार जीत, खोना, पाना, सुख, दुख इन सबके चलते मन विचलित ना करें। अगर जिन्दगी सुख शांति से ही भरी होती तो आदमी जन्म लेते समय रोता नहीं। जन्म के समय रोना और मरकर रुलाना इसी के बीच के संघर्ष भरें समय को जिन्दगी कहते है।

दिपेश कुमार

M.Sc.- 2nd Sem. (Chemistry)

मेरी चैतुरगढ़ यात्रा

हमारे स्कूल जीवन का आखिरी साल यानी कक्षा–12 वीं पता ही नहीं चला कि हमारे स्कूल के 12 साल कब निकल गए। खैर, ये सब छोड़ो और आगे बढ़ते हैं। हमारा स्कूल जा रहा है चैतुरगढ़, जिसे छत्तीसगढ़ का कश्मीर कहते हैं। जहाँ जाने में बड़ा मजा आने वाला है। हमारे विद्यालय के सभी लोग यानी मैं और मेरे दोस्त हम पिकनिक जाने के लिए बहुत उत्साहित थे। विद्यालय के सभी विद्यार्थियों ने पिकनिक के लिए नाम लिखवाया और सामान पैक किए। और हम सब लोग उत्साहित थे एक सुंदर दृश्य को देखने के लिए।

किसी सुंदर जगह जाने के लिए बड़े ही उत्साह वाला दिन होता है। कि कल क्या होगा? कई लोग रात को सो नहीं पाते हैं, उनके मन में एक अलग–सा उत्साह होता है। इसी खुशी के कारण एक विद्यार्थी अपनी यात्रा के दौरान वह अपनी हर जरूरी और काम की चीजों को रख लेता है ताकि वह अपनी यात्रा में मजे कर सके। तो हमारा सफर शुरू होता है 30/11/2024 को ये सफर हमारे लिए बहुत यादगार होने वाला था।

वो सफर की शुरुआत होती है सुबह के 07:30 बजे चिड़ियों की चहचहाहट के साथ। स्कूल के सभी छात्र एवं छात्राएँ यानी मेरे सारे दोस्त सभी लोग स्कूल गेट में सुबह जाकर जमा थे। उनके चेहरे में एक अलग ही उत्साह था, एक अलग ही खुशी थी। सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों ने मिलकर एक यादगार फोटो खिंचवाया और बस की पूजा की, नारियल फोड़ा और एक यादगार सफल यात्रा की कामना करते हैं।

सुबह का समय था, बहुत ही सुहावना वातावरण था। और हमारी गाड़ी चली और हम सभी कुछ खाते हुए जा रहे थे। बहुत ठंडी हवा चल रही थी। सभी लोग स्वेटर पहनकर बड़े मजे के साथ जा रहे थे। रास्ते के दौरान सभी लोग बस में गाना–गाते और हँसी–मजाक करते अपने इस सफर को यादगार बना रहे थे।

रास्ते में बाहर का दृश्य देखने लायक था। चारों ओर हरियाली और एक अच्छा वातावरण था। और रास्ते में बहुत सारे मंदिर थे, जहाँ सभी लोग मन्नतें माँग रहे थे और हम सभी लोग कामना कर रहे थे कि हमारी यात्रा सफल हो। आखिरकार हम अपने मंजिल तक पहुँच गए।

यकीन मानिए, वहाँ आने के बाद एक अलग ही अनुभव हुआ। मानो कि मैं एक अलग ही दुनिया में आ गया हूँ। वहाँ का दृश्य देखकर मैं आश्चर्यचकित हो गया। मैं समझ गया कि इसे छत्तीसगढ़ का कश्मीर क्यों कहते हैं। वहाँ का दृश्य देखने लायक था। पहाड़, तालाब, मंदिर आदि।

हम सभी लोगों ने वहाँ पहुँचकर थोड़ा आराम किया और उसके बाद हमने पहाड़ चढ़ना शुरू किया। पहाड़ चढ़ने में बहुत मजा आ रहा था। उसके आस–पास छोटी–छोटी दुकानें लगी थीं, जहाँ प्रसाद, भगवान जी की तस्वीरें, पानी, नाश्ता आदि की सुविधा उपलब्ध थी।

हम सभी लोग अलग–अलग समूह में बँटे हुए थे और पहाड़ की चढ़ाई कर रहे थे। कुछ लोग बड़े उत्साह के साथ तो कुछ लोग रुक–रुक कर दृश्य का मजा ले रहे थे। और एक इस सुंदर दृश्य को अपने मोबाइल में कैद कर रहे थे।

फिर आखिरकार पहाड़ पर चढ़कर सभी ने आराम करने के पश्चात सभी लोगों ने विधिवत नाश्ता किया और निकल पड़े मंदिर के दर्शन के लिए। यह स्थान पाली से 25 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। इसके पहाड़ की चोटी की ऊँचाई 3060 फीट है। इसका निर्माण राजा पृथ्वीदेव प्रथम ने कराया था।

चैतुरगढ़ में महिषासुर मर्दिनी मंदिर माता रानी की 12 भुजाओं वाली मूर्ति स्थापित है। मान्यता यह है कि यहाँ माँगी गई मन्नत पूरी होती है। यह पल भी अपनी जिंदगी में शायद भूल न पाऊँगा। इतना सुंदर वातावरण और हमारा छात्र जीवन का आखिरी साल।

वहाँ सभी दोस्तों के साथ कैद की गई तस्वीरें इस पल की याद हर बार याद दिलाएँगी। अपने शिक्षक और दोस्तों के साथ हँसी–मजाक करते, एक साथ नाश्ता करते, एक साथ गाना–गाते इस सुंदर दृश्य को देखना।

पता नहीं ये पल मेरी जिंदगी में दोबारा आएगा या नहीं। कोई आए या न आए, पर मेरे शिक्षक और दोस्त जरूर याद आएँगे। मैं आशा करता हूँ कि अगर मेरी जिंदगी में सभी दोस्त और शिक्षक के साथ दोबारा जाने का अवसर प्राप्त होगा, तो इस दृश्य का आनंद मैं जरूर लूँगा।

मुझे वहाँ जाकर एक अलग ही दुनिया का दर्शन हुआ। जैसे कि मैं किसी दूसरी दुनिया में आ गया हूँ। मैं अपने अनुभव से कहता हूँ कि वहाँ कोई नहीं गया है, तो एक बार जरूर जाएँ। हमें यह भी सीख मिलती है कि छात्र को पढ़ाई के साथ–साथ शैक्षणिक भ्रमण के लिए जरूर जाना चाहिए, जिससे हमारा मन बहुत शांत होता है।

और एक टीम बनाकर घूमना चाहिए, जिससे एकता का परिचय होता है। वहाँ जाकर हमारे शिक्षक की भी यादें ताजा हो गईं। आने के समय सभी लोग बहुत थक गए थे। सभी लोगों ने आने के समय रास्ते में मंदिर दर्शन भी किए, जिससे सभी लोगों को बड़ा मजा आया। और आने के समय हम सभी लोगों ने नाश्ता भी किया, जिससे हमारी यात्रा और ताजा हो गई। और इसी के साथ हमारी चैतुरगढ़ की यादगार यात्रा भी समाप्त हो गई। यकीन मानिए इस सफर ने हमें बहुत सारा मजा आया और प्राचीन मंदिरों को देखने का मौका मिला। इसी के साथ हमारे सफर का मजेदार समापन हुआ।

सौरभ गेंदले

B.Sc.- 1st Sem.

प्रतिवेदन शैक्षणिक सत्र 2024–25

1. प्रवेश समिति – सत्र 2024–25 में बी.ए. भाग एक एवं एम.ए. पूर्व व अंतिम राजनीति विज्ञान व समाजशास्त्र की प्रवेश प्रक्रिया शासन के द्वारा जारी किये गए प्रवेश नियम के तहत पूर्ण की गई।

2. सांस्कृतिक गतिविधि –

शास. जे.एम.पी. महाविद्यालय, तखतपुर में सांस्कृतिक व साहित्यिक गतिविधियों के तहत दिनांक 18–02–25 से 19–02–25 को छात्र–छात्राओं द्वारा क्रमशः पुष्प सज्जा, बेस्ट फ्रॉम वेस्ट, गिफ्ट पैकिंग, भाषण प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता, फस्ट–एड–किट, मटका सजाओ, रंगोली, मेहंदी , नारियल सजाओ, व्यंजन आदि प्रतियोगिताओं में भाग लिया एवं दिनांक 08–03–25 को सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं पुरस्कार वितरण का आयोजन किया गया। जिसमें छात्र–छात्राओं ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

समस्त कार्य प्राचार्य महोदय के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में संपन्न किए गए।

विभागाध्यक्ष

डॉ. श्रीमती मीना शर्मा

प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)

प्रतिवेदन

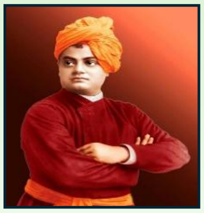

राष्ट्रीय सेवा योजना

"समाज सेवा के माध्यम से व्यक्तित्व का विकास" सूत्र सराबोर राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई तखतपुर में स्वयंसेवको की संख्या 100 है, जिसमें छात्र–छात्राएँ सम्मिलित हैं। सत्र 2025–26 में पंजीकृत छात्र–छात्राओं की संख्या कुल 100 है, जिसमें 55 छात्र व 45 छात्राएँ हैं।

इस वर्ष 'B' प्रमाण पत्र के लिए 22 छात्र–छात्राएँ सम्मिलित हुए हैं। 'C' प्रमाण पत्र के लिए 16 छात्र–छात्राओं ने प्रोजेक्ट कार्य के साथ साक्षात्कार दिया है। विगत वर्षों की भाँति

इस वर्ष छ. ग. राज्य पुलिस सेवा में 4 छात्रों का चयन हुआ, जिसमें सूर्य प्रकाश पटेल, जीत पटेल, अजीत चतुर्वेदी, श्याम कार्तिक रजक सम्मिलित हैं। छात्र डेविड खूँटे का BSF में चयन इस वर्ष हुआ है।

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन ग्राम पंचायत खपरी में हुआ। NSS स्वयंसेवकों को जनभागीदारी समिति के द्वारा श्वेत रंग का टी – शर्ट और टोपी प्रदान किया गया जिससे स्वयंसेवकों में उत्साहित होकर प्रत्येक कार्यक्रम में श्वेतवर्ण के गणवेश के साथ कार्यक्रम की शोभा बढ़ाते हैं।

राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक समाज के प्रत्येक वर्ग के साथ मिलकर सामाजिक गतिविधियों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

कार्यक्रम अधिकारी
राष्ट्रीय सेवा योजना
डॉ. डी.पी. चंद्रवंशी

क्रीड़ा विभाग

खेलकूद गतिविधियाँ

शा. जे. एम. पी. महा. तखतपुर का क्रीड़ा विभाग प्रतिभा सम्पन्न खिलाड़ियों से आप्लावित है। परिक्षेत्र स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन LCIT महा. बिलासपुर में आयोजित किया गया, जिसमें हमारे महाविद्यालय द्वारा उपविजेता का खिताब मिला । परिक्षेत्र स्तरीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में महाविद्यालय से 10 छात्र–छात्राओं ने गोला फेंक, भाला फेंक, लंबी कूद, 100, 200, 400 मीटर दौड़ में भाग लिया।

जिसमें लंबी कूद में छात्र गौतम निषाद ने स्वर्ण पदक जीतकर महाविद्यालय का नाम रोशन किया। इसी प्रकार ऊँची कूद प्रतियोगिता में छात्र गौतम निषाद ने रजत पदक प्राप्त कर द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

इसी तरह महाविद्यालय द्वारा फुटबॉल, खो–खो, बैडमिंटन, बेसबाल, सॉफ्टबाल, ताइक्वांडो प्रतियोगिता के परिक्षेत्र स्तरीय खेलों में भेजकर उनका उत्साहवर्धन किया गया।

शतरंज के परिक्षेत्र स्तरीय प्रतिस्पर्धा में हमारा महाविद्यालय चौंपियंस रहा जिसमें अर्गित खंडेलवाल, वासु गुप्ता, सौरभ, सिद्धेश, अरुण भाग लिया।

अर्गित खंडेलवाल और वासु गुप्ता का चयन राज्य स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता में चयन हुआ जहाँ उनका विजय अभियान जारी रहा और वर्तमान उनका चयन राष्ट्रीय स्तर पर

विश्वविद्यालय शतरंज प्रतियोगिता में उनका चयन हुआ है।

इस प्रकार महाविद्यालय खेल अभियान अनवरत जारी है जिसमें हमारे प्राचार्य डॉ. विनोद कुमार दुबे जी का उत्साहवर्धन खिलाड़ियों के लिए मील का पत्थर सिद्ध हो रहा है।

क्रीड़ा अधिकारी

डॉ. डी.पी. चंद्रवंशी

कार्यालय प्राचार्य

शासकीय जे.एम.पी. महाविद्यालय
तखतपुर, जिला – बिलासपुर (छ.ग.)
Email Id: principalgjmptakhatpur@gmail.com
College Website: www.govtjmpcollegetkp.ac.in

तखतपुर, दिनांक ....

प्रतिवेदन – 2024–25

सांस्कृतिक गतिविधिः – छ.ग. रजत जयंती कार्यक्रम

शास. जे.एम.पी. महाविद्यालय तखतपुर में छ.ग. रजत जयंती कार्यक्रम 2025 के अंतर्गत दिनांक 09/09/2025 को क्विज प्रतियोगिता, ग्रुप डिस्कशन एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें क्रमशः 32, 33 एवं 13 छात्र–छात्राओं ने भाग लिया।

समस्त प्रतियोगिताएँ प्राचार्य महोदय के मार्गदर्शन में संपन्न किये गये।

सांस्कृतिक प्रभारी
डॉ. मीना शर्मा

महाविद्यालय में संचालित रेड क्रॉस यूनिट की गतिविधियाँ

महाविद्यालय की रेड क्रॉस यूनिट मानव सेवा, समाज कल्याण एवं जन जागरूकता के क्षेत्र में कार्य करने वाली एक महत्वपूर्ण संस्था है। हमारे महाविद्यालय में रेड क्रॉस यूनिट विद्यार्थियों में सेवा, सहयोग, करुणा एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने का कार्य करती है। यह यूनिट वर्ष भर विभिन्न सामाजिक एवं स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों का आयोजन कर समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाती है।

रेड क्रॉस यूनिट द्वारा समय–समय पर स्वच्छता अभियान का आयोजन किया जाता है। इसके अंतर्गत महाविद्यालय परिसर, आसपास के क्षेत्र तथा सार्वजनिक स्थलों की सफाई कर विद्यार्थियों को स्वच्छता के महत्व के बारे में जागरूक किया जाता है। युवाओं को नशे से दूर रखने के उद्देश्य से नशामुक्ति अभियान चलाया जाता है। इस गतिविधि के अंतर्गत पोस्टर प्रदर्शनी, रैली, भाषण एवं जागरूकता शिविर का आयोजन किया जाता है।

रेड क्रॉस यूनिट द्वारा HIV/AIDS के बचाव हेतु राष्ट्रीय दिवस पर विशेष कार्यक्रम जैसे विशेषज्ञों के व्याख्यान, पोस्टर प्रदर्शनी एवं रैली के माध्यम से इस रोग के बचाव के उपायों की जानकारी दी जाती है, जिससे समाज में फैली भ्रांतियों को दूर करने में सहायता मिलती है।

रेड क्रॉस यूनिट द्वारा महाविद्यालय में समय–समय पर स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जाता है, जिसमें विद्यार्थियों के स्वास्थ्य की जाँच, निःशुल्क दवाइयाँ दी जाती हैं। इन शिविरों में डॉक्टर एवं उनकी टीम द्वारा ब्लड प्रेशर, शुगर, वजन, नेत्र जाँच से संबंधित समस्याओं की जाँच कर निःशुल्क परामर्श दिए जाते हैं।रक्तदान को महादान कहा जाता है। इस भावना को बढ़ावा देने के लिए रेड क्रॉस यूनिट द्वारा महाविद्यालय की NCC एवं NSS यूनिट के साथ मिलकर रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाता है।

इस प्रकार महाविद्यालय की रेड क्रॉस यूनिट स्वच्छता, नशामुक्ति, स्वास्थ्य जागरूकता, रक्तदान एवं अन्य सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य कर रही है। इन कार्यक्रमों से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है। रेड क्रॉस यूनिट के प्रयासों से महाविद्यालय न केवल शिक्षा का केंद्र बनता है, बल्कि सामाजिक चेतना का भी प्रमुख माध्यम बनता है। यह आशा है कि भविष्य में भी यह यूनिट इसी प्रकार समाज सेवा के पथ पर अग्रसर होकर मानवता की सेवा करती रहेगी।

रेड क्रॉस प्रभारी

श्रीमती सिमरन टेकचंदानी

पौधारोपण हमारी सामाजिक जिम्मेदारी का प्रतीक

जेएमपी कालेज में पौधरोपण करते अतिथि● नईदुनिया

नईदुनिया न्यूज, तखतपुरः जब हम सांस लेते हैं तो सांस छोड़ना भी होता है यही प्रकृति का शाश्वत नियम है जब हम कुछ लेते हैं तो हमें कुछ देना भी होता है इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए पीएम नरेंद्र मोदी की पहल पर एक पेड़ मां के नाम पर अभियान चलाया जा रहा है।

उक्त बाते विधायक धर्मजीत सिंह ने शासकीय जेएमपी महाविद्यालय के वनस्पति उद्यान में चंदन का पौधा रोपण करने के दौरान कही। उन्होंने कहा कि एक वृक्ष मां के नाम की भावना को आत्मसात करते हुए कहा कि मां हमें जीवन देती है और वृक्ष प्रकृति के मां जैसे होते हैं। जब हम मां के नाम पर एक पौधा लगाते हैं। तो वह हमारी कृतज्ञता भावनात्मक जुड़ाव और सामाजिक जिम्मेदारी का प्रतीक बन जाता है।

इस मौके पर उपस्थित प्राचार्य विनोद दुबे, जनभागीदारी समिति के अध्यक्ष अशोक सिंह ठाकुर, सदस्य पुष्पा प्रधान, अश्वनी शर्मा, मंडल अध्यक्ष नैनलाल साहू, संतोष कौशिक, बंसी पांडे, कृष्ण कुमार साहू, राधिका कौशिक ने भी पौधारोपण किया। इस अवसर पर विधायक धर्मजीत सिंह ने महाविद्यालय से संबंधित समस्याओं का जानकारी ली तथा स्टेडियम आडिटोरियम लाइब्रेरी आदि बारिश के बीच मैदान का निरीक्षण करते हुए आवश्यक कार्रवाई कर कमियों को दूर करने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर विधायक प्रतिनिधि अमित मंदानी, ज्ञान सिंह, दिनेश राजपूत, किशन सचदेव, पार्षद कैलाश देवांगन, सुरेश देवांगन, मलय जहानी, रितेश शिवहरे, सरजू यादव, सूरज रजक, मोहित राजपूत, चिंटू ठाकुर, राहुल ठाकुर, राकेश तिवारी, पुष्पराज ठाकुर, करण पाली उपस्थित रहे।

Botanical
Garden
Govt. J.M.P. College

सकीय जे.एम.पी. महाविद्यालय तखतपुर
रजत जयंती समारोह
शासकीय जे.एम.पी. महाविद्यालय, तखतपुर
जिला-बिलासपुर (छ.ग.)
आपका हार्दिक स्वागत करता है
GPS Map Camera
Takhatpur, Chhattisgarh, India
4vjg+j3h, Azad Nagar, Takhatpur, Chhattisgarh 495330, India
Lat 22.132093° Long 81.876142°
06/09/2025 12:09 PM GMT +05:30
Google

भारत निर्वाचन
विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों के
GPS Map Camera
Khapri, Chhattisgarh, India
Khapri, Shop No 01, Mahamaya Chouk, Main Road, Khapri, Chhattisgarh 495330, India
Lat 22.132428° Long 81.911328°
05/12/2025 02:11 PM GMT +05:30
Google

WORLD AIDS DAY

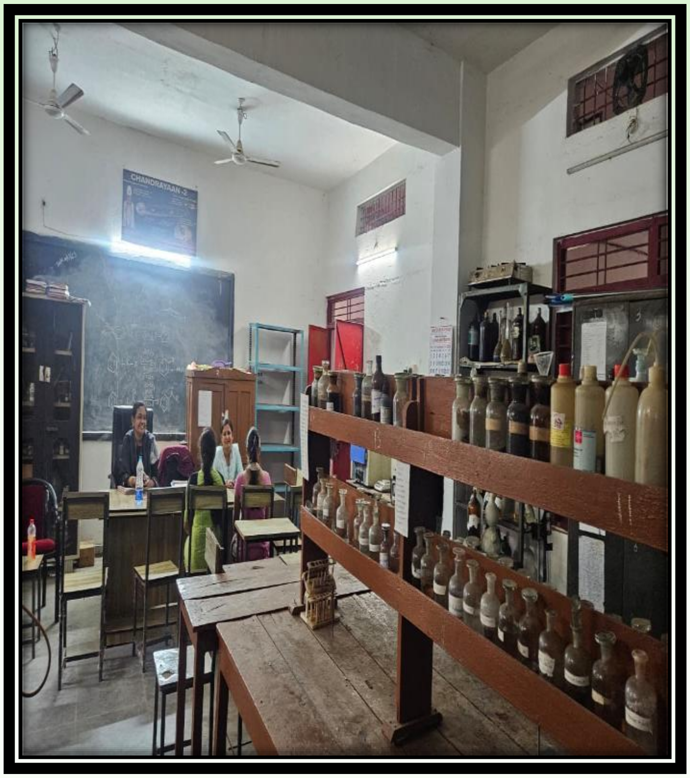
CHANDRAYAAN-2
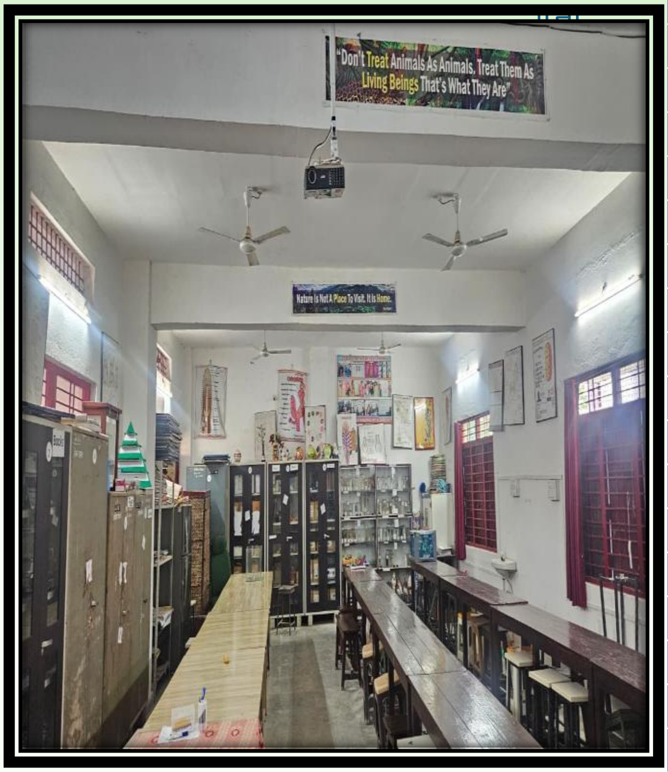
"Don't Treat Animals As Animals, Treat Them As Living Beings That's What They Are"
Nature Is Not A Place To Visit. It Is Home.
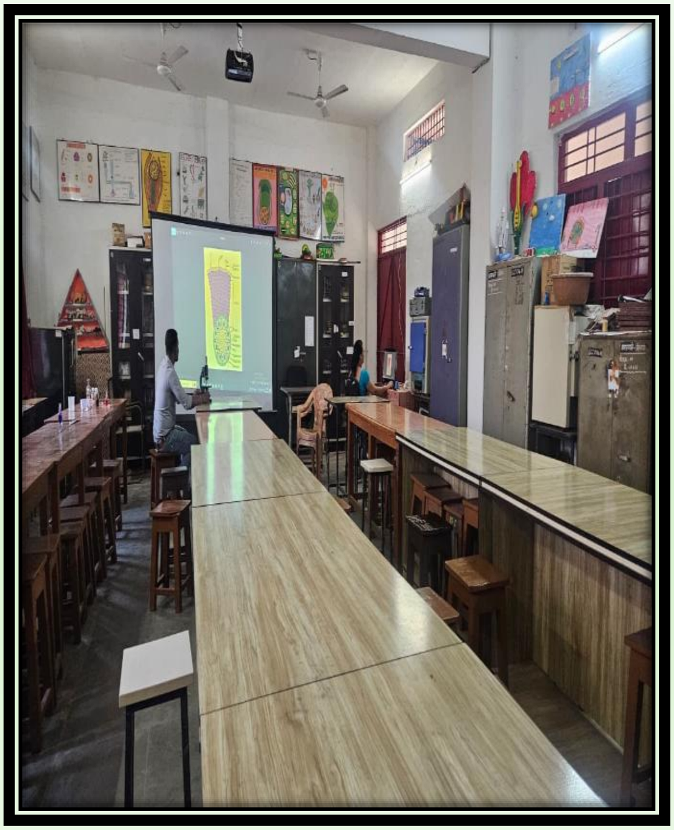

If You Can't Explain It Simply, You Don't Understand It Well Enough.

शासकीय जे.एम.पी. महाविद्यालय तखतपुर

विश्व एड्स दिवस
युथ रेडक्रॉस सोसायटी

ALUMNI MEET
GPS Map Camera
Takhatpur, Chhattisgarh, India
185/5, Azad Nagar, Takhatpur, Chhattisgarh 495330, India
Lat 22.132178° Long 81.876158°
10/09/2025 02:08 PM GMT +05:30
Google

शासकीय जे.एम.पी.महाविद्यालय,तखतपुर जिला-बिलासपुर (छ.ग.)
पुरस्कार वितरण सह सांस्कृतिक कार्यक्रम
सत्र-2024-25
दिनांक-08 मार्च 2025 शनिवार
तखतपुर
जिला-बिलासपुर (छ.ग.)
आपका
हार्दिक अभिनंदन
करता है।

शासकीय जे.एम.पी.महाविद्यालय,तखतपुर जिला-बिलासपुर (छ.ग.)
सत्र-2024-25

Happy Independence Day

बेटी बचाओ।
बेटी पढ़ाओ।

सेवा पखवाड़ा 2025
राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई
शा.जे.एम.पी. महाविद्यालय तखतपुर
रेडक्रास सोसायटी
स्वास्थ्य शिविर

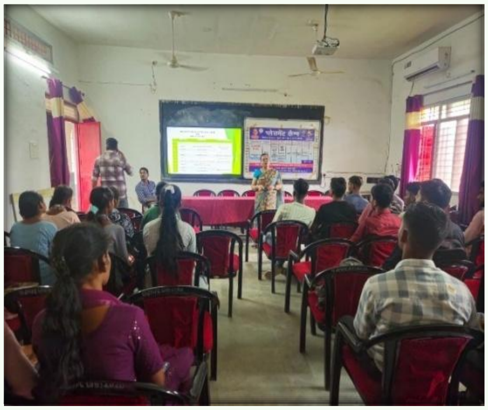

NATIONAL CADET CORPS

सेमीनार

DEPARTMENT OF SPORTS
INDOOR SPORTS TRAINING FACILITY CENTRE
GOVT. J.M.P. COLLEGE TAKHATPUR DIST. BILASPUR (C.G.)

शासकीय जे.एम.पी. महाविद्यालय तखतपुर
स्वदेशी संकल्प दौड़

Words Which Can Catch a Wolf
CHART TYPES
Pie
Line
HACKER

Follow us on Social Media
DOCUMENT
AFFECT
OPERATING SYSTEMS
Fedora
Windows 8
Linux

meesho
PDF

स्व.श्री जनकलाल जी पाण्डेय
ग्राम-धरमपुरा
जन्म
मृत्यु